पंचम माला, खंड 35 अंक 1, सोमवार, 18 फरवरी 1974/29 माघ 1895 (शक)

Fifth Series, Vol. XXXV, No. 1, Monday, February 18, 1974/Magha 29, 1895 (Saka)

लोक-सभा वाद-विवाद

का

संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION OF LOK SABHA DEBATES

[दसवां सत्र / Tenth Session]

5th Lok Sabha

[खंड 35 में अंक 1 से 10 तक हैं / Vol. XXXV contains nos. 1 to 10]

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली

LOK SABHA SECRETARIAT

NEW DELHI

मूल्य : दो रुपये

Price : Two Rupees

[यह लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण है और इसमें अंग्रेजी/हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है।

[This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi]

विषय सूची/CONTENTS

अंक 1, सोमवार, 18 फरवरी, 1974/29 माघ, 1895 (शक)

No. 1, Monday, February 18, 1974/ Magha 29, 1895 (Saka)

विषय	SUBJECT
सदस्यों की वर्णानुक्रम सूची	Alphabetical List of Members
सभा के पदाधिकारी	Officers of the House
मंत्रिमंडल के सदस्यों, राज्य मंत्रियों तथा उप-मंत्रियों की सूची	List of Members of the Cabinet, Ministers of State and Deputy Ministers
सदस्य द्वारा शपथ ग्रहण	Members Sworn
राष्ट्रपति का अभिभाषण-सभा पटल पर रखा गया	President's Address—*Laid on the Table*
निधन-संबंधी उल्लेख	Obituary References—
श्रीमती इन्दिरा गांधी	Shrimati Indira Gandhi
श्री एच० एन० मुकर्जी	Shri H. N. Mukherjee
श्री अटल बिहारी बाजपेयी	Shri Atal Bihari Vajpayee
श्री पी० एम० मेहता	Shri P. M. Mehta
श्री वी० मायावन	Shri V. Mayavan
श्री समर गुह	Shri Samar Guha
डा० कर्णी सिंह	Dr. Karni Singh
श्री एम० सत्यनारायण राव	Shri M. Satyanarayan Rao
श्री जाबुवंत धोटे	Shri Jambuwant Dhote
श्री राम कंवर	Shri Ramkanwar
श्री पी० जी० मावलंकर	Shri P.G. Mavalankar
श्री विभूति मिश्र	Shri Bibhuti Mishra
श्री आर० के० सिन्हा	Shri R.K. Sinha
प्रो० एस० एल० सक्सेना	Prof. S. L. Saksena
श्री शिव शंकर प्रसाद यादव	Shri Shiv Shankar Prasad Yadav
श्रीमती एन० ग्रोडफ्रे	Shrimati M. Godfrey

सदस्यों की वर्णानुक्रम सूची

पंचम लोक सभा

अ

अकिनीडू, श्री मगन्ती (गुडिवाडा)
अग्रवाल, श्री वीरेन्द्र (मुरादाबाद)
अग्रवाल, श्री श्रीकृष्ण (महासमुन्द)
अचल सिंह, श्री (आगरा)
अजीज इमाम, श्री (मिर्जापुर)
अंसारी, श्री जियाउर्रहमान (उन्नाव)
अप्पालानायडु , श्री (अनकपल्ली)
अम्बेश, श्री (फिरोजाबाद)
अरविन्द नेताम, श्री (कांकेर)
अलगेशन, श्री ओ० वी० (तिरुत्तनी)
अवधेश चन्द्र सिंह, श्री (फर्रुखाबाद)
अहमद, श्री फखरुद्दीन अली (बारपेटा)
अहिरवार, श्री नाथूराम (टीकमगढ़)

आ

आगा, श्री सैयद अहमद (बारामूला)
आजाद, श्री भागवत झा (भागलपुर)
आनन्द सिंह, श्री (गोंडा)
आस्टिन, डा० हेनरी (एरणाकुलम)

इ

इसहाक, श्री ए० के० एम० (बसिरहाट)

उ

उइके, श्री मंगरू (मंडाला)
उन्नीकृष्णन्, श्री के० पी० (बडागरा)
उरांव, श्री कार्तिक (लोहारड़गा)
उरांव, श्री टुना (जलपाईगुड़ी)
उलगनम्बी, श्री आर० पी० (वैल्लौर)

ए

एन्थनी, श्री फ्रैंक (नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय)
एंगती, श्री बीरेनु (दीफू)

क

ककोटी, श्री रोविन (डिब्रुगढ़)
कछवाय, श्री हुकम चन्द (मुरेना)
कटकी, श्री लीलाधार (नवगांव)
कडनापल्ली, श्री रामचन्द्रन् (कासरगोड)
कतामुतु, श्री एम० (नागापट्टिनम्)
कदम , श्री जे० जी० (वर्धा)
कदम, श्री दत्ताजीराव (हतकंगले)
कपूर ,श्री सतपाल (पटियाला)
कमला कुमारी, कुमारी (पालामऊ)
कमला प्रसाद, श्री (तेजपुर)
कर्णसिंह, डा० (ऊधमपुर)
कर्णी सिंह, डा० (बीकानेर)
कल्याणसुन्दरम् , श्री एम० (तिरूचिरापल्ली)
कलिंगारायर, श्री मोहनराज (पोलाची)
कस्तूरे, श्री ए० एम० (खामगांव)
कादर, श्री एस० ए० (बम्बई मध्य दक्षिण)
कांबले, श्री एन ० एस० (पंढ़रपुर)
कांबले, श्री टी० डी० (लातूर)
काकोडकर, श्री पुरुषोत्तम (पंजिम)
कामराज , श्री के० (नागरकोइल)
कामाक्षैया, श्री डी० (नेल्लोर)
काले, श्री (जालना)
कावड़े, श्री वी० आर० (नाशिक)
काहनडोल, श्री जैड० एम० (मालेगाव)
किन्दर लाल, श्री (हरदोई)
किरुतिनन, श्री था (शिवगंज)
किस्कु, श्री ए० के० (झाड़ग्राम)
कुरील , श्री बैजनाथ (रामसनहीघाट)
कुरेशी, श्री मुहम्मद शफी (अनन्तनाग)
कुलकर्णी, श्री राजा (बम्बई उत्तर पूर्व)
कुशोक बाकुला, श्री (लद्दाख)
केदार नाथ सिंह, श्री (सुल्तानपुर)

कैलास, डा० (बम्बई दक्षिण)
केवीचुसा, श्री ए० (नागालैंड)
कोत्राशट्टी, श्री ए० के० (बेलगांव)
कौपा, श्री सी० एच० मोहम्मद (मंजेरी)
कौल, श्रीमती शीला (लखनऊ)
कृष्णन्, श्री ई० आर० (सलेम)
कृष्णन्, श्री एम० के० (पोन्नाणि)
कृष्णन्, श्री जी० वाई० (कोलार)
कृष्णप्पा, श्री एम० वी० (हस्कोटे)
कृष्णा कुमारी, श्रीमती (जोधपुर)

ख

खाडिलकर, श्री आर० के० (बारामती)

ग

गंगादेव श्री पी० (अंगुल)
गंगादेवी, श्रीमती (मोहनलालगंज)
गणेश, श्री के० आर० (अन्दमान तथा निकोबार द्वीप समूह)
गरचा, श्री देवेन्द्र सिंह (लुधियाना)
गावीत, श्री टी० एच० (नन्दुरबार)
गांधी, श्रीमती इन्दिरा (रायबरेली)
गायकवाड़, श्री फतहसिंह राव (बड़ौदा)
गायत्री देवी श्रीमती (जयपुर)
गिरि श्री एस० बी० (वारंगल)
गिरि, श्री बी० शंकर (दमोह)
गिल, श्री महेन्द्र सिंह (फिरोजपुर)
गुप्त, श्री इन्द्रजीत (अलीपुर)
गुह, श्री समर (कन्टाई)
गेंदा सिंह, श्री (पदरौना)
गोखले, श्री एच० आर० (बम्बई उत्तर पश्चिम)
गोटखिन्डे, श्री अण्णासाहिब (सांगली)
गोगोई, श्री तरूण (जोरहाट)
गोदरा, श्री मनीराम (हिसार)
गोपाल, श्री के० (करूर)
गोपालन, श्री ए० के० (पालघाट)
गोमांगो, श्री गिरीधर (कोरापुट)
गोबिन्द दास, डा० (जबलपुर)
गोयेन्का, श्री आर० एन० (विदिशा)
गोस्वामी, श्री दिनेश चन्द्र (गौहाटी)
गोस्वामी, श्रीमती विभा घोष (नवद्वीप)
गोहन, श्री सी० सी० (नाम निर्देशित आसाम का उत्तर पूर्व सीमान्त क्षेत्र)
गोडफ्रे, श्रीमती एम० (नामनिर्देशित आंग्ल भारतीय)
गौडर, श्री जे० माता (नीलगिरी)
गौडा, श्री पम्पन (रायचूर)
गौतम, श्री सी० डी० (बालाघाट)

घ

घोष, श्री पी० के० (रांची)

च

चकलेश्वर, सिंह, श्री (मथुरा)
चर्टजी, श्री सोमनाथ (बर्दवान)
चतुर्वेदी, श्री रोहन लाल (एटा)
चन्द्र गौडा, श्री डी० वी० (चिकमगलूर)
चन्द्रप्पन, श्री सी० के० (तेल्लीचेरी)
चन्द्र शेखर सिंह, श्री (जहानाबाद)
चन्द्र शेखरप्पा बीरबासप्पा, श्री टी० वी० (शिमोगा)
चन्द्राकर, श्री चन्दूलाल (दुर्ग)
चन्द्रिका, प्रसाद, श्री (बलिया)
चव्हाण, श्रीमती प्रेमलाबाई (कराड़)
चव्हाण, श्री यशवन्तराव (सतारा)
चावड़ा, श्री के० एस० (पाटन)
चावला, श्री अमरनाथ (दिल्ली सदर)
चिक्कलिंगय्या, श्री के० (मांड़या)
चित्तिबाबू, श्री सी० (चिंगलपट)
चिन्नाराजी, श्री सी० के० (निरुपत्तूर)
चेलाचामी, श्री ए० एम० (टेंकासी)
चौधरी, श्री अमरनाथ सिंह (मांडली)
चौधरी, श्री ईश्वर, (गया)
चौधरी, श्री त्रिदिब (बराहमपुर)
चौधरी, श्री नीतिराज सिंह (हौशंगाबाद)
चौधरी, श्री बी० ई० (बीजापुर)
चौधरी, श्री मोइनुल हक (धुबरी)
चौहान, श्री भारत सिंह (धार)

छ

छुट्टन लाल, श्री (सवाई माधोपुर)
छोटे लाल, श्री (चैल)

ज

जगजीवन राम, श्री (सासाराम)
जदेजा, श्री डी० पी० (जामनगर)
जनार्दनन, श्री सी० (त्रिचूर)
जमीलुर्रमान, श्री मुहम्मद (किशनगंज)
जयलक्ष्मी, श्रीमती वी० (शिवकाशी)
जाफर शरीफ, श्री सी० के० (कनकपुरा)
जार्ज, श्री ए० सी० (मुकुन्दपुरम)
जार्ज, श्री वरके (कोट्टायम)
जितेन्द्र प्रसाद, श्री (शाहजहानपुर)
जूल्फिकार अली खां, श्री (रामपुर)
जोजफ, श्री एम० एम० (पीरमाडे)
जोरदर, श्री दिनेश (माल्दा)
जोशी, श्री जगन्नाथ राव (शाजापुर)
जोशी, श्री पोपटलाल एम० (बनसकंठा)
जोशी, श्रीमती सुभद्रा (चांदनी चौक)

झ

झा, श्री चिरंजीव (सहरसा)
झा, श्री भोगेन्द्र (जायनगर)
झारखण्डे राय, श्री (घोसी)
झंझुनवाला, श्री विश्वनाथ (चित्तौड़गढ़)

ट

टोम्बी सिंह, श्री एन० (आन्तिरिक मनीपुर)

ठ

ठाकुर, श्री कृष्णराव (चिमूर)
ठाकरे, श्री एस० बी० (यवतमाल)

ड

डागा, श्री मूल चन्द (पाली)
डोडा, श्री हीरालाल (बांसवाड़ा)

ढ

ढिल्लो, डा० जी० एस० (तरनतारन)

त

तरोडकर, श्री वी० बी० (नान्देड़)
तुलसीराम, श्री वी० (पेद्दापल्लि)
तुलाराम, श्री (घाटमपुर)
तिवारी, श्री डी० एन० (गोपालगंज)
तिवारी, श्री रामगोपाल (बिलासपुर)
तिवारी, श्री शंकर (इटावा)
तिवारी, श्री चन्द्रभाल मनी (बलरामपुर)
तेवर, श्री पी० के० एम० (रामनाथपुरम्)
तैयब हुसैन, श्री (गुड़गांव)

द

दंडपाणी, श्री सी० टी० (धारापुरम)
दत्त, श्री बीरेन (त्रिपुरा पश्चिम)
दंडवते, प्रो० मधु (राजापुर)
दरबारा सिंह, श्री (होशियारपुर)
दलबीर सिंह, श्री (सिरसा)
दलीप सिंह (बाह्य दिल्ली)
दामाणी, श्री एस० आर० (शोलापुर)
दास, श्री अनादि चरण (जाजपुर)
दास, श्री रणुपद (कृषनगर)
दासचौधरी, श्री बी० के० (कूच बिहार)
दासप्पा, श्री तुलसीदास (मैसूर)
दिनेश सिंह, श्री (प्रतापगढ़)
दीक्षित, श्री गंगाचरण (खंडवा)
दीक्षित, श्री जगदीश चन्द्र (सीतापुर)
दीवीकन, श्री (कल्लाकुरीची)
दुमादा, श्री एल० के० (डहानू)
दुबे, श्री ज्वाला प्रसाद (भंडारा)
दुराईरासु, श्री ए० (पैरम्बलूर)
देव, श्री शंकर नारायण सिंह (बांकुरा)
देव, श्री दशरथ (त्रिपुरा पूर्व)
देव, श्री पी० के० (कालाहांडी)
देव, श्री राज सिंह (बोलनगीर)
देशमुख, श्री के० जी० (अमरावती)
देशमुख, श्री शिवाजी राव एस० (परभणि)
देशपांडे, श्रीमती रोजा (बम्बई मध्य)
देसाई, श्री डी० डी० (कैरा)
देसाई, श्री मोरारजी (सूरत)
द्विवेदी, श्री नागेश्वर (मछलीशहर)

ध

धर्मराज सिंह, श्री (शाहबाद)
धामनकर, श्री (भिवंडी)
धारिया, श्री मोहन (पूना)
धूसिया, श्री अनंत प्रसाद (बस्ती)
धोटे, श्री जांबुवंत (नागपुर),

न

नन्दा, श्री गुलजारीलाल (कैथल)
नरेन्द्र सिंह, श्री (सतना)
नायक, श्री बक्शी (फुलबनी)
नायक, श्री बी० वी० (कनारा)
नायर, श्री एन० श्रीकान्तन (क्विलोन)
नायर, श्रीमती शकुन्तला (केसरगंज)
नाहाटा, श्री अमृत (बाड़मेर)
निंबालकर, श्री (कोल्हापुर)
नेगी, श्री प्रताप सिंह (गढ़वाल)

प

पंडा, श्री डी० के० (भंजनगर)
पंडित, श्री एस० टी० (भीर)
पटनायक, श्री जे० बी० (कटक)
पटनायक, श्री बनमाली (पुरी)
पटेल, श्री अरविंद एम० (राजकोट)
पटेल, श्री एच० एम० (ढंढ़का)
पटेल, श्री नटवर लाल (मेहसाना)
पटेल, कुमारी मणिबेन (साबरकंठा)
पटेल, श्री नानूभाई एन० (बलसार)
पटेल, श्री प्रभुदास (डाभोई)
पटेल, श्री रामूभाई (दादरा तथा नगर हवेली)
पन्त, श्री कृष्ण चन्द्र (नैनीताल)
परमार, श्री भालजीभाई (दोहद)
पलोडकर, श्री मानिकराव (औरंगाबाद)
पस्वान, श्री राम भगत (रोसेरा)
पहाड़िया, श्री जगन्नाथ (हिंडौन)
पांडे, श्री कृष्ण चन्द्र (खलीलाबाद)
पांडे, श्री तारकेश्वर (सलेमपुर)
पांडे, श्री दामोदर (हजारीबाग)
पांडे, श्री नरसिंह नारायण (गोरखपुर)
पांडे, श्री राम सहाय (राजनंद गांव)
पांडेय, डा० लक्ष्मीनारायण (मन्दसौर)
पांडे, श्री सरजू (गाजीपुर)
पांडे, श्री सुधाकर (चन्दौली)
पाओकाई होओकिप, श्री (बाह्य मनीपुर)
पाटिल, श्री अनन्तराव (खेड़)
पाटिल, श्री ई० बी० विखे (कोपरगांव)
पाटिल, श्री एम० बी० (बागलकोट)
पाटिल, श्री कृष्णराव (जलगाँव)
पाटिल, श्री टी० ए० (उस्मानाबाद)
पाटिल, श्री सी० ए० (धूलिया)
पाणिग्रही, श्री चिन्तामणि (भुवनेश्वर)
पाराशर, प्रो० नारायण चन्द (हमीरपुर)
पारिख, श्री रसिकलाल (सुरेन्द्रनगर)
पार्थासारथी, श्री पी० (राजमपेट)
पिल्ले, श्री आर० बालकृष्णन् (मावलिकरा)
पुरती, श्री एम० एम० (सिंहभूम)
पेजे, श्री एस० एल० (रत्नागिरी)
पैन्यूली, श्री परिपूर्णानन्द (टिहरी गढ़वाल)
प्रताप सिंह, श्री (शिमला)
प्रधान, श्री धनशाह (शहडोल)
प्रधान, श्री के० (नौसरंगपुर)
प्रबोध चन्द्र, श्री (गुरदासपुर)

ब

बनमाली, बाबू, श्री (सम्बलपुर)
बनर्जी, श्री एस० एम० (कानपुर)
बनर्जी, श्रीमती मुकुल (नई दिल्ली)
बनेरा, श्री हमेन्द्र सिंह (भीरवाड़ा)
बड़े, श्री आर० पी० (खारगोन)
बरूआ, श्री वेदब्रत (कालियाबोर)
बर्मन, श्री आर० एन० (बलूरघाट)
बसु, श्री ज्योतिर्मय (डायमंड हार्बर)
बसुमतारी, श्री डी० (कोकराझार)
बहुगुणा, श्री हेमवतीनन्दन (इलाहाबाद)
वाजपेयी, श्री विद्याधर (अमेटी)
बादल, श्री गुरदास सिंह (फाजिल्का)
बाबूनाथ सिंह, श्री (सरगुजा)

बारुपाल, श्री पन्नालाल (गंगानगर)
बालकृष्णन, श्री के० (अम्बलपुजा)
बालकृष्णैया, श्री टी० (तिरूपति)
बासप्पा, श्री के० (चित्रदुर्ग)
बिष्ट, श्री नरेन्द्र सिंह (अलमोड़ा)
बीरेन्द्र सिंह राव, श्री (महेन्द्रगढ़)
बूटा सिंह, श्री (रोपड़)
बेरवा, श्री ओंकारलाल (कोटा)
बेसरा, श्री सत्य चरण (दुमका)
ब्रजराज सिंह कोटा, श्री (झालावाड़)
ब्रह्मानन्द जी, श्री स्वामी (हमीरपुर)
ब्राह्मण, श्री रतन लाल (दार्जिलिंग)

भ

भगत, श्री एच० के० एल० (पूर्व दिल्ली)
भगत, श्री बी० आर० (शाहबाद)
भट्टाचर्य, श्री एस० पी० (उलुबेरिया)
भट्टाचार्य, श्री जगदीश (घाटल)
भट्टाचार्य, श्री दीनेन (सीरमपुर)
भट्टचार्य, श्री चपलेन्दु (गिरिडीह)
भागीरथ, भंवर श्री (झाबुआ)
भार्गव, श्री वशेश्वर नाथ (अजमेर)
भार्गवी, तनकप्पन श्रीमती (अडूर)
भाटिया, श्री रघुनन्दन लाल (अमृतसर)
भीनराव, श्री एम० (नगरकुरनूल)
भुवाराहन, श्री जी० (मैटूर)
भौरा, श्री मानसिंह (भटिंडा)

म

मलिक, श्री मुख्तियार सिंह (रोहतक)
मंडल, श्री जगदीश नारायण (गोंडूडा)
मंडल, श्री यमुना प्रसाद (समस्तीपुर)
मल्लिकार्जुन, श्री (मेडक)
मधुकर, श्री कमल मिश्र (केसरिया)
मनोहरन, श्री के० (मद्रास उत्तर)
मल्होत्रा, श्री इन्द्रजीत (जम्मू)
महन्ती, श्री सुरेन्द्र (केन्द्रपाडा)
महाजन, श्री वाई एस० (बुलडाना)
महाजन, श्री विक्रम (कांगडा)
महाता, श्री देवेन्द्र नाथ (पुरुलिया)
महापात्र, श्री श्याम सुन्दर (बालासोर)
महाराज सिंह, श्री (मैनपुरी)
महिषी डा० सरोजिनी (धारवाड़ उत्तर)
मांझी, श्री भोला (जमुई)
मांझी, श्री कुमार (क्योंझर)
मांझी, श्री गजाधर (सुन्दरगढ़)
मारक, श्री के० (तुर)
मारन, श्री मुरासोली (मद्रास दक्षिण)
मार्तण्ड, सिंह श्री (रीवा)
मालन्ना, श्री के० (मधुगिरि)
मालवीय, श्री के० डी० (डुमरियागंज)
मायावन, श्री वी० (चिदाम्बरन)
मायातेवर, श्री के० (डिंडिगुल)
मावलंकर, श्री पी० जी० (अहमदाबाद)
मिर्धा, श्री नाथूराम (नागौर)
मिश्र, श्री एल० एन० (दरभंगा)
मिश्र, श्री जी० एस० (छिंदवाडा)
मिश्र, श्री जगन्नाथ (मधुवनी)
मिश्र, श्री विभूति (मोतीहारी)
मिश्र, श्री श्यामनन्दन (बेगूसराय)
मिश्र, श्री एस० एन० (कन्नौज)
मुकर्जी, श्री एच० एन० (कलकत्ता उत्तर पूर्व)
मुखर्जी, श्री सरोज (कटवा)
मुखर्जी, श्री समर (हावड़ा)
मूर्ति, श्री बी० एस० (अमालापुरम)
मुत्तुस्वामी, श्री एम० (तिरुचेंगोड़)
मुन्शी, श्री प्रिय रंजन दास (कलकत्ता दक्षिण)
मुरुगनतम, श्री एस० ए० (तिरुनेलवेली)
मुर्मु, श्री योगेशचन्द्र (राजमहल)
मेनन, श्री वी० के० कृष्ण (त्रिवेन्द्रम्)
मेलकोटे, डा० जी० एस० (हैदराबाद)
मेहता, डा० जीवराज (अमरेली)
मेहता, श्री पी० एम० (भावनगर)
मेहता, डा० महिपतराय (कच्छ)
मोदक, श्री विजय (हुगली)
मोदी, श्री पीलू (गोधरा)
मोदी, श्री श्रीकिशन (सीकर)
मोहन स्वरूप, श्री, (पीलीभीत)

मोहम्मद इस्माइल, श्री एम० (बेरकपुर)
मोहम्मद खुदाबक्श श्री (मुर्शिदाबाद)
मोहम्मद ताहिर, श्री (पूर्णिया)
मोहम्मद यूसुफ, श्री (सिवान्)
मोहम्मद शरीफ, श्री (पेरियाकुलम)
मोहसिन, श्री एफ० एच० (धारवाड़ दक्षिण)
मौर्य, श्री बी० पी० (हापुड़)

य

यादव, श्री करन सिंह (बदांयू)
यादव, श्री चन्द्रजीत (आजमगढ़)
यादव, श्री डी० पी० (मुंगेर)
यादव, श्री ज्ञानेश्वर प्रसाद (कटिहार)
यादव, श्री नागेन्द्र प्रसाद (सीतामढ़ी)
यादव, श्री राजेन्द्र प्रसाद (मधेपुरा)
यादव, श्री शिवशंकर प्रसाद (खगरिया)

र

रघुरामैया, श्री के० (गुन्टूर)
रणबहादुर, सिंह श्री (सिंधी)
रवि श्री, बायलार (चिरयिंकील)
राउत श्री, भोला (बगहा)
राज बहादुर, श्री (भरतपुर)
राजदेवसिंह, श्री (जौनपुर)
राजू श्री एम० टी० (नरसापुर)
राजू, श्री पी० बी० जी० (विशाखापत्तनम)
राठिया, श्री उमद सिंह (रायगढ़)
राणा, श्री एम० बी० (भड़ौच)
राधाकृष्णन्, श्री एस० (कुडलूर)
रामकंवर श्री, (टोंक)
रामजी राम, श्री (अकबरपुर)
रामदेव सिंह, श्री (महाराजगंज)
राम धन, श्री (लालगंज)
राम प्रकाश, श्री (अम्बाला)
राम सिंह भाई, श्री (इन्दौर)
राम हेडाऊ, श्री (राम टेकं)
रामेशेखर प्रसाद सिंह, श्री (छप्परा)
राम सूरत प्रसाद, श्री (बांसगांव)
रामसेवक, चौधरी (जालौन)
राम स्वरूप, श्री (राबर्टसगंज)
राम, श्री तुलमोहन (अरारिया)
राय, श्री विश्वनाथ (देवरिया)
राय, डा० सरदीश (बोलपुर)
राय, श्रीमती माया (रायगंज)
राय, श्रीमती सहोदराबाई (सागर)
राव, श्रीमती बी० राधाबाई ए० (भद्राचलम)
राव, श्री नागेश्वर (मचिलीपट्टनम)
राव, श्री एम० सत्यनारायण (करीमनगर)
राव, डा० के० एल० (विजयवाड़ा)
राव, श्री के० नारायण (बोबिली)
राव, श्री जगन्नाथ (छत्रपुर)
राव, श्री पट्टाभिराम (राजामुन्द्री)
राव, श्री पी० अंकिनीडु प्रसाद (ओंगोल)
राव, श्री जे० रामेश्वर (महबूबनगर)
राव, श्री राजगोपाल (श्रीकाकुलम)
राव, श्री डा० वी० के० आर० वर्दराज (बेल्लारी)
राव, श्री एम० एस० संजीवी (काकीनाडा)
रिछारिया, डा० गोविन्ददास (झांसी)
रुद्र प्रताप सिंह, श्री (बाराबंकी)
रेड्डी, श्री वाई० ईश्वर (कड़प्पा)
रेड्डी, श्री एम० रामगोपाल (निजामाबाद)
रेड्डी, श्री के० रामकृष्ण (नलगोंडा)
रेड्डी, श्री के० कोडडा रानी (कुरनूल)
रेड्डी, श्री पी० गंगा (आदिलाबाद)
रेड्डी, श्री पी० एंथनी (अनन्तपुर)
रेड्डी, श्री पी० नरसिन्हा (चित्तूर)
रेड्डी, श्री पी० बायपा (हिन्दपुर)
रेड्डी, श्री पी० बी० (कावली)
रेड्डी, श्री बी० एन० (निरायलगूड़ा)
रोहतगी, श्रीमती सुशीला (बिल्लोर)

ल

लकप्पा, श्री के० (तुमकुर)
लक्ष्मीकान्तम्मा, श्रीमती टी० (खम्मम)
लक्ष्मीनारायणन्, श्री एम० आर० (तिंडिवनम)
लक्ष्मणन्, श्री टी० एस० (श्रीपरेम्बदूर)
लम्बोदर, बलियार, श्री (बस्तर)
लालजी भाई, श्री (उदयपुर)

लास्कर, श्री निहार (करीमगंज)
लिमये, श्री मधु (बांका)
लुतफल हक श्री (जंगीपुर)

व

वर्मा, श्री सुखदेव प्रसाद (नवादा)
वर्मा, श्री फूलचन्द (उज्जैन)
वर्मा, श्री बालगोविन्द (खेरी)
वाजपेयी, श्री अटलबिहारी (ग्वालियर)
विकल, श्री रामचन्द्र (बागपत)
विजयपाल सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)
विद्यालंकर श्री अमरनाथ (चण्डीगढ़)
विश्वनाथन, श्री जी० (वान्डीवाश)
वीरभद्र सिंह, श्री (मंडी)
वीरय्या, श्री के० (पुछूकोटै)
वेंकटस्वामी, श्री जी० (सिद्दिपेट)
वेंकटासुबय्या, श्री पी० (नन्दयाल)
वेकारिया, श्री (जूनागढ़)

श

शंकर देव, श्री (बीदर)
शंकरानन्द, श्री बी० (चिकोड़ी)
शंकर दयाल सिंह (चतरा)
शफकत जंग, श्री (कराना)
शफी, श्री ए० (चांदा)
शम्भूनाथ, श्री (सदपुर)
शमीम, श्री एस० ए० (श्रीनगर)
शर्मा, श्री ए० पी० (बक्सर)
शर्मा, श्री नवलकिशोर (दौसा)
शर्मा, श्री माधोराम (करनाल)
शर्मा, श्री राम नारायण (धनबाद)
शर्मा, श्री राम रत्न (बांदा)
शर्मा, डा० शंकर दयाल (भोपाल)
शर्मा, डा० हरि प्रसाद (अलवर)
शशि भूषण, श्री (दक्षिण दिल्ली)
शाक्य, श्री महादीपक सिंह (कासगंज)
शास्त्री, श्री राजाराम (वाराणसी)
शास्त्री, श्री रामावतार (पटना)
शास्त्री, श्री विश्वनारायण (लखीमपुर)
शास्त्री, श्री शिवकुमार (अलीगढ़)
शास्त्री, श्री शिवपूजन (विक्रमगंज)
शाहनवाज खां, श्री (मेरठ)
शिन्दे, श्री अण्णासाहिब पी० (अहमदनगर)
शिनाय, श्री पी० आर० (उदीपी)
शिवनाथ सिंह, श्री (झुंझनू)
शिवप्पा, श्री एन० (हसन)
शुक्ल, श्री बी० आर० (बहराइच)
शुक्ल, श्री विद्याचरण (रायपुर)
शेट्टी, श्री के० के० (मंगलौर)
शेर सिंह प्रो० (झज्जर)
शैलानी, श्री चन्द्र (हाथरस)
शिवस्वामी, श्री एम० एम० (तिरुचेंडर)

स

संकटा प्रसाद, डा० (मिसरिख)
संतबख्श सिंह, श्री (फतेहपुर)
सईद, श्री पी० एम० (लक्कादीव मिनिकाय तथा अमीनदीवी द्वीपसमूह)
सक्सेना, प्रो० एस० एल० (महाराजगंज)
सतीश चन्द्र, श्री (बरेली)
सत्पथी, श्री देवेन्द्र (ढेंकानाल)
सत्यनारायण, श्री बी० (पार्वतीपुरम्)
सम्भली, श्री इसहाक (अमरोहा)
सरकार, श्री शक्ति कुमार (जयनगर)
सांगलिभाना, श्री (मिजोरम)
सांधी, श्री नरेन्द्र कुमार (जालसौर)
साठे, श्री बसन्त (अकोला)
साधूराम, श्री (फिलौर)
सामन्त, श्री एस० सी० (तामलुक)
सामिनाथन्, श्री पी० ए० (गोबीचे टिट्पलयम)
साल्वे, श्री नरेन्द्र कुमार (बेतल)
सावन्त, श्री शंकरराव (कोलाबा)
सावित्री श्याम, श्रीमती (आवला)
साहा, श्री अजीत कुमार (विष्णुपूर)
साहा, श्री गदाधर (बीरभूम)
सिन्हा, श्री सी० एम० (मयूरभंज)
सिन्हा, श्री धर्मवीर (बाढ़)

सिन्हा, श्री नवल किशोर (मुजफ्फरपुर)
सिन्हा, श्री आर० के० (फैजाबाद)
सिन्हा, श्री सत्यन्द्र नारायण (औरंगाबाद)
सिंह, श्री डी० एन० (हाजीपुर)
सिंह, श्री विश्वनाथ प्रताप (फूलपूर)
सिद्धथ्या, श्री एस० एम० (चामराजनगर)
सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री (नालन्दा)
सिंधिया, श्री माधवराव (गुना)
सिंधिया, श्रीमती वी० आर० (भिंड)
सुदर्शनम्, श्री एम० (नरसारावपेट)
सुन्दर लाल, श्री (सहारनपुर)
सुब्रह्मण्यम, श्री सी० (कृष्णगिरि)
सुब्रावेलु, श्री (मयुरम)
सुरेन्द्रपाल सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
सूर्यनारायण, श्री के० (एलूरू)
सेकरा, श्री इराज्मुद (मारमागोआ)
सेझियान, श्री (कुम्बकोणम)
सेट, श्री इब्राहीम सुलेमान (कोजीकोड)
सेठी, श्री अर्जुन (भद्रक)
सेन, श्री ए० के० (कलकत्ता उत्तर पश्चिम)
सेन, डा० रानेन (बारसाट)
सेन, श्री रोबिन (आसनसोल)
सैनी, श्री मुल्कीराज (देहरादून)
सोखी, श्री स्वर्ण सिंह (जमशेदपुर)
सोमसुन्दरम्, श्री एस० डी० (थंजाबूर)
सोलंकी, श्री सोम चंद (गांधीनगर)
सोलंकी, श्री प्रवीण सिंह (आनन्द)
सोहनलाल, श्री टी० (करोलबाग)
स्टीफन, श्री सी० एम० (मुवत्तुपुजा)
स्वर्ण सिंह, श्री (जालंदर)
स्वामीनाथन्, श्री आर० वी० (मदुरै)
स्वामी, श्री सिद्धरामेश्वर (कोप्पल)
स्वैल, श्री जी० जी० (स्वायत्तशासी जिल)

ह

हसदा, श्री सुबोध (मिदनापुर)
हनुमन्तया, श्री के० (बंगलौर)
हरिकिशोर सिंह, श्री (पुपरी)
हरी सिंह, श्री (खुर्जा)
हाजरा, श्री मनोरंजन (आरामबाग)
हालदार, श्री माधुर्यर्य (मथुरापुर)
हाल्दर, श्री कृष्णचन्द्र, (आसग्राम)
हाशिम, श्री एम० एम० (सिकन्दराबाद)

लोक सभा

अध्यक्ष

डा० जी० एस० ढिल्लों

उपाध्यक्ष

श्री जी० सी० स्वैल

सभापति तालिका

श्री वसंत साठे
डा० हेनरी आस्टिन
श्री दिनेश चन्द्र गोस्वामी
श्री नवल किशोर सिंह
मौलाना इसहाक सम्भली
श्री जगन्नाथ राव जोशी

महासचिव

श्री श्यामलाल शकधर

भारत सरकार

मंत्रीमंडल के सदस्य

प्रधान मंत्री, परमाणु ऊर्जा मंत्री, इलैक्ट्रानिक्स मंत्री, तथा अन्तरिक्ष मंत्री	श्रीमती इन्दिरा गांधी
कृषि मंत्री	श्री फखरुद्दीन अली अहमद
वित्त मंत्री	श्री यशवन्तराव चव्हाण
रक्षा मंत्री	श्री जगजीवन राम
विदेश मंत्री	श्री स्वर्ण सिंह
पैट्रोलियम और रसायन मंत्री	श्री देवकान्त बरुआ
योजना मंत्री	श्री डी० पी० धर
गृह मंत्री	श्री उमाशंकर दीक्षित
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्री	श्री एच० आर० गोखले
इस्पात और खान मंत्री	श्री केशव देव मालवीय
रेल मंत्री	श्री ललित नारायण मिश्र
भारी उद्योग मंत्री	श्री टी० ए० पाई
संसदीय कार्य मंत्री	श्री के० रघुरामैया
पर्यटन और नागर विमानन मंत्री	श्री राज बहादुर
संचार मंत्री	श्री के० ब्रह्मानन्द रेड्डी
निर्माण और आवास मंत्री	श्री भोला पासवान शास्त्री
स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्री	डा० कर्ण सिंह
औद्योगिक विकास तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री	श्री सी० सुब्रह्मण्यम
नौवहन और परिवहन मंत्री	श्री कमलापति त्रिपाठी

राज्य मंत्री

वाणिज्य मंत्री	प्रो० डी० पी० चट्टोपाध्याय
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री नीतिराज सिंह चौधरी
योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री मोहन धारिया
वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री के० आर० गणेश
सूचना और प्रसारण मंत्री	श्री आई० के० गुजराल
पूर्ति और पुनर्वास मंत्री	श्री आर० के० खाडिलकर
पैट्रोलियम और रसायन मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री शाहनवाज खां
पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय में राज्य मंत्री	डा० श्रीमती सरोजिनी महिषी
कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री	डा० वी० पी० मौर्य
संसदीय कार्य विभाग तथा निर्माण और आवास मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री ओम मेहता
गृह मंत्रालय तथा कार्मिक विभाग में राज्य मंत्री	श्री राम निवास मिर्धा
शिक्षा, समाज कल्याण तथा संस्कृति मंत्री	प्रो० एस० नुरूल हसन
सिंचाई और विद्युत मंत्री	श्री कृष्ण चन्द्र पंत
नौवहन तथा परिवहन मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री एम० बी० राना

श्रम मंत्री	श्री रघुनाथ रेड्डी
कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री अण्णासाहिब पी० शिन्दे
रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) में राज्य मंत्री	श्री विद्याचरण शुक्ल
संचार मंत्रालय में राज्य मंत्री	प्रो० शेर सिंह
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री सुरेन्द्र पाल सिंह

उप-मंत्री

औद्योगिक विकास मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री जियाउर्रहमान अंसारी
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री वेदव्रत बरुआ
स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री कोंडाजी बासप्पा
वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री ए० सी० जार्ज
इस्पात और खान मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री सुबोध हंसदा
स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री ए० के० किस्कु
गृह मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री एफ० एच० मोहसिन
औद्योगिक विकास मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री प्रणब कुमार मुखर्जी
शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय तथा संस्कृति विभाग में उप-मंत्री	श्री अरविंद नेताम
संचार मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री जगन्नाथ पहाड़िया
रक्षा मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री जे० बी० पटनायक
इस्पात और खान मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री सुखदेव प्रसाद
सिंचाई और विद्युत मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री सिद्धेश्वर प्रसाद
रेल मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री मुहम्मद शफी कुरेशी
वित्त मंत्रालय में उप-मंत्री	श्रीमती सुशीला रोहतगी
संसदीय कार्य विभाग में उप-मंत्री	श्री बी० शंकरानन्द
भारी उद्योग मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री दलबीर सिंह
सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री धर्मवीर सिंह
संसदीय कार्य विभाग में उप-मंत्री	श्री केदार नाथ सिंह
पूर्ति और पुनर्वास मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री जी० वेंकटस्वामी
श्रम मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री बालगोविन्द वर्मा
शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय तथा संस्कृति विभाग में उप-मंत्री	श्री डी० पी० यादव

लोकसभा

LOK SABHA

सोमवार, 18 फरवरी 1974/29 माघ 1895 (शक)
Monday, February 18, 1974/Magha 29, 1895 (Saka)

लोक-सभा बारह बज कर पैंतीस मिनट पर समवेत हुई ।

The Lok Sabha met at Thirty five minutes past Twelve of the Clock

अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए ।

Mr. Speaker *in the Chair*

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

Members sworn

(1) श्रीमती राजा देशपांडे (बम्बई मध्य)

(2) श्री राम हेडाऊ (रामटेक)

राष्ट्रपति का अभिभाषण--सभा पटल पर रखा गया

President's Address—Laid on the Table

अध्यक्ष महोदय : महासचिव ?

महासचिव : मैं 18 फरवरी, 1974 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष दिये गये राष्ट्रपति के अभिभाषण की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

Shri Atal Bihari Vajpayee (Gwalior) : Mr. Speaker, I have got a point of order. Please ask the Secretary General not to lay the copy of President's Address on the Table. As per Speaker's directions No. 2, the list of business should come only after the obituary references. I fail to understand the changes in the Agenda. Why did you after your direction ? It is true that you have got the right to do so, but it is done only in very peculiar circumstances and for that you should take the House in to confidience. We would request you to please let us first make the obituary references and thereafter the Address may be laid so that we can deal with that properly.

श्री ज्योतिर्मय बसु (डायमंड हार्बर) : मैं श्री बाजपेयी के कथन का समर्थन करना चाहता हूं इस सम्बन्ध में लिखित रूप में स्पष्ट निर्देश दें और यदि कोई विशिष्ट कारण नहीं है या इस सभा के सामने आप उन्हें स्पष्ट नहीं करते आप उनका उल्लंघन क्यों करते हैं ? हमें पहले दिवंगत

साथियों के प्रति अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित करने दीजिये और तदुपरान्त आप कार्य सूची के विषयों पर चर्चा करें जिनकी आपने गलत सूची बनाई है ।

Mr. Speaker : You have started these things the very first day. Both of you alongwith the other gentleman had seen me in my chamber and I had told you since 1950 it has been the practice to lay the President's Address on the same day it was delivered. There is no questions of any directions therein ; We have been following this practice since long. Directions do not come in every matter. Last year also this matter was raised and with the consent of all, The President's Address was laid down prior to the obituary references. and after the latter, the House was adjourned for that day. If you do not agree, then do every thing tomorrow, nothing today; let obituary references also be made tomorrow. It does not look nice to lay the Address after the obituary references. It has been the practice since 1950.

Shri Atal Vihari Vajpayee : The previous practices are not being followed these days. It had never happened that the Delhi Police was called inside the Parliament, they are standing here right now. Sardar Vithal Bhai Patel did not allow the police inside even during British period, but you have the posted the police into the lobby even.

श्री श्याम नन्दन मिश्र : प्रश्न यह उठता है कि क्या शोक सन्देश को जानबूझकर अन्य मदों पर चर्चा को टालने के लिये नहीं रखा गया है । यह सरलता से सोचा जा सकता है कि अध्यक्ष महोदय किसी की सलाह से, शोक सन्देशों से पूर्व राष्ट्रपति का अभिभाषण सभा पटल पर इसलिये रखना चाहते हैं ताकि शोक सन्देशों के बाद किसी मद पर चर्चा न हो सके; अतः शोक सन्देशों को बाद में लिया जाना चाहिये । यदि यही मन्शा है तो हमें इस पर गंभीर आपत्ति है ।

Mr. Speaker : This practice has been going on since long and there is nothing like that in it.

श्री श्याम नन्दन मिश्र : क्या प्रक्रिया रही है ? आप ने उस संबंध में चली आ रही प्रक्रिया का ज़िक्र किया है । वर्ष 1950 के बाद से अब तक का हुआ है ? अधिकांश वर्षों में तो ऐसा कुछ नहीं हुआ है ।

Mr. Speaker : Last year also the same procedure was followed. You go into the record.

श्री श्याम नन्दन मिश्र : मेरा नम्र निवेदन यह है कि आप इस बारे में कोई परम्परा बना दीजिये ताकि यह मामला बार-बार न उठे । पिछले वर्ष ही इसमें परिवर्तन हुआ था, हमने तब भी इस आकार पर आपत्ति उठाई थी कि इस मामले में परम्परा का उल्लंघन किया गया था ।

Mr. Speaker : We are working according to the conventions laid down.

श्री श्याम नन्दन मिश्र : हमें तो यह याद पड़ता है कि पिछले अधिकांश वर्षों में तो यह प्रक्रिया रही है कि शोक सन्देश राष्ट्रपति के अभिभाषण के सभापटल पर रखे जाने से पूर्व दियें गये हैं।

श्री ज्योतिर्मय बसु : हम आपसे मिले थे और यह सारा मामला स्पष्ट करने का प्रयास हमने किया था । यह आपके निर्देशों में लिखित रूप से विद्यमान है और इनका कभी उल्लंघन नहीं हुआ है।

यदि इन निर्देशों का अनुसरण ही नहीं किया जाता तो फिर उन्हें रखते ही क्यों हैं? उन्हें यमुना नदी में क्यों नहीं बहा देते?

Mr. Speaker : We do not continue sitting on the day of the Presidential Address You all have decided to have a brief sitting on that day and lay the Address on the Table.. Now when we are having a sitting to lay the Address, let us have the obituary references also. There is nothing bad in it.

श्री श्याम नन्दन मिश्र : राष्ट्रपति के अभिभाषण को सभा पटल पर रखने के पूर्व शोक सन्देश देने में क्या हर्ज है? यदि सभा यह चाहे कि इसके बाद कोई कार्यवाही न हो तो हम आप का निर्णय स्वीकार करेंगे परन्तु राष्ट्रपति के अभिभाषण को सभापटल पर रखने से पूर्व शोक सन्देश देने में क्या हर्ज है?

Mr. Speaker : If yo i want to lay obituary reference first. Then let us lay the Address tomorrow..... but it has already been laid on the Table.

Shri Atal Bihari Vajpayee : We can not agree with it. When you called the Secretary General. I had raised my point of Order then and there; therefore this is certainly not a vaild proceeding the President's Address has not yet been laid.

Mr. Speaker : After the obituary references for the Members who passed away in the last inter-session, the House would be adjourned for the day. It is therefore graceful to have the obituary references later then the laying of President's Address.

Shri Atal Bihari Vajpayee : You may take up the obituary references later and let the Address be laid tomorrow.... (interruptions) May I know whether this decision is to be taken by you on the majority of the Congress Party ?

Mr. Speaker : We would go according to the Agenda fixed.

Shri Samar Guha : You can very well have the President' Address laid after the obituary references. It is the conventions and also in the fitness of things also,

Mr. Speaker : I am arranged. Please anyhow pass 24 hours. You can have that tomorrow. What is there when session is held a day or so later. After all what is serious about it ?

Shri Atal Bihari Vajpayee : Please don't compel us to such things which we do not want to do and which would not fit in the dignity of this House.

Mr. Speaker : Better donot do that at least not today. You start that from tomorrow

श्री ज्योतिर्मय बसु : मैं चाहता हूं कि आप इस बारे में कोई निर्णय करें। हम यहां बुद्धु बने नहीं रह सकते।

Mr. Speaker : We are going on according to the agenda fixed.

Shri Atal Bihari Vajpayee : Has the copy of the President's Address already been laid on the Table ?

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने रख दी है ।

श्री समर गुह : महासचिव के उठने से पूर्व ही श्री वाजपेयी ने प्रश्न उठाया था कि क्या वह सभा पटल पर रख सकते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : जब वह सभा पटल पर रखा जायेगा तब सदस्यों को उपलब्ध करा दिया जायेगा ।

Shri Atal Bihari Vajpayee : It means it has not yet been laid.

अध्यक्ष महोदय : मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप ऐसे मत कीजिये । उसे सभा पटल पर रखा जा चुका है।

श्री श्याम नन्दन मिश्र : नहीं।

Shri Atal Bihari Vajpayee : When a point of Order is being made, then can the Secretary General who is an expert of Parliamentary Practices and who has written books on the subject, commit such a mistake of laying that Address on the Table ?

श्री श्याम नन्दन मिश्र : क्या मैं आपका ध्यान प्रक्रिया संबंधी नियम की ओर दिला सकता हूँ। आदेश पत्र में कहा गया है कि महासचिव अभिभाषण की प्रति सभा पटल पर रखेंगे। ऐसा करने के लिये उन्हें आपकी अनुमति मांगनी होगी और जब आप अनुमति देंगे तो केवल उसके बाद ही वह उसे सभा पटल पर रखेंगे।

अध्यक्ष महोदय : मैंने अनुमति दी है जब यह बात आदेशपत्र में छपी है तो इसका अर्थ है कि मैंने अनुमति दे दी है ।

श्री श्याम नन्दन मिश्र : जी नहीं । वह आपने स्थान से खड़े तक नहीं हुए हैं और न ही उन्होंने इसकी घोषणा की है तथा न ही उसे सभा-पटल पर रखा है ।

श्री एच०एन० मुखर्जी : आप सीधे-सादे ढंग से यह क्यों नहीं कह देते कि महासचिव उठें और यह कह दें कि वह उक्त काग़ज़ सभा पटल पर रख रहें हैं। जब तक वह ऐसा नहीं कहते तब तक वह पत्र सभा पटल पर रखा गया नहीं माना जायेगा । उनके उठने से पूर्व एक व्यवस्था का प्रश्न उठाया गया था और प्रक्रिया का वह भाग अभी पूरा नहीं किया गया है ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने उन्हें बुलाया था और उन्होंने रखा।

श्री एच०एन० मुखर्जी : जी नहीं।

अध्यक्ष महोदय : महासचिव का कहना है कि उन्होंने सभा पटल पर रख दिया था और यदि माननीय सदस्य इससे संतुष्ट नहीं हैं तो वह उसे दोबारा सभा पटल पर रख देंगे।

श्र एच०एन० मुखर्जी : व्यवस्था का प्रश्न उठाया गया था और उस पर निर्णय के बाद आप उन्हें सभा पटल पर रखने को कहें यही सामान्य प्रक्रिया है ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने व्यवस्था के प्रश्न का उत्तर दे दिया है और उन्होंने सभा पटल पर रख दिया है।

श्री ज्योतिर्मय बसु : हम इन अत्यन्त संक्षिप्त तथा चुपचाप की गई कार्यवाहियों से सहमत नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय : हमने गत वर्ष पर प्रक्रिया अपनाई थी, हम इस वर्ष भी उसका अनुसरण कर रहे हैं। आप हर बार इसमें बाधा क्यों डालते हैं ?

खैर, महासचिव इसे दोबारा सभापटल पर रख दें।

महासचिव : मैं 18 फरवरी, 1974 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष किये गये राष्ट्रपति के अभिभाषण की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूँ।

श्री ज्योतिर्मय बसु : हम इसके विरोध में सभा भवन से बाहर जाते हैं ।

इसके पश्चात् श्री ज्योतिर्मय तथा कुछ अन्य सदस्य सभा भवन से बाहर चले गये ।
Shri Jyotirmoy Bosu and some other Members then left the House

---

राष्ट्रपति का अभिभाषण

सम्माननीय सदस्यगण,

1. आपका सत्र इस बार कठिनाई और परीक्षा की घड़ी में आरम्भ हो रहा है। कीमतें बढ़ने, आवश्यक वस्तुओं की कमी और हड़ताल, बन्द व असंतोष, जिसने देश के कुछ भागों में हिंसात्मक रूप ले लिया है और जिनसे उत्पादन व वितरण में रुकावटें हुई हैं, के कारण जनसाधारण को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हैं । अन्तर्राष्ट्रीय तेल संकट का हमारी अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ा है । इन अप्रत्याशित घटनाओं से हमारे सामाजिक और आर्थिक विकास की गति निश्चय ही धीमी पड़ी है । इस स्थिति में लोगों की चिन्तित मनोदशा स्वभाविक है । मुझे उन लोगों, विशेष रूप से निर्धन वर्ग वालों से जिन्हें कष्ट उठाना पड़ा है गहरी सहानुभूति है ।

2. शायद ही कभी किसी देश के सामने लगातार एक के बाद एक इतनी बड़ी समस्याएं आई होंगी, जितनी कि पिछले तीन वर्षों में हमारे सामने आई हैं । यह राष्ट्र की हिम्मत की निरन्तर परीक्षा का समय रहा है। राष्ट्र ने इन कठिनाइयों का सामना करते हुये विकास के मूल प्रयत्नों में रूकावटें नहीं आने दी हैं। इस उपलब्धि को नजर-अन्दाज नहीं किया जाना चाहिये, हालांकि कठिन समय में रचनात्मक पक्षों पर हमारा ध्यान नहीं जाता।

3. कुछ अच्छी घटनाऐं भी घटी हैं। उनमें से एक यह है कि आंध्र प्रदेश के लोगों ने अपने अन्त-प्रदेशीय तनाव की समस्या का हल निकाल लिया है। एक साल पहले इस समस्या का समाधान असम्भव सा लगता था। मैं इस राज्य के सभी वर्गों के लोगों को उनकी बुद्धिमानी और मेल-मिलाप की भावना के लिये बधाई देता हूं। छः-सूत्री फार्मूले से इस राज्य के पूर्ण एकीकरण में सहायता मिलेगी और यहां पिछड़े इलाकों का तेज़ी से विकास होगा।

4. आर्थिक क्षेत्र में दो आशाजनक प्रवृत्तियां देखने को मिली हैं—निर्यात-आय में वृद्धि हुई है और सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के कामों में सुधार हुआ है । लगभग दो साल पहले तक, हमारे निर्यात का धीमा विकास चिन्ता का कारण था, लेकिन 1972-73 से स्थिति में काफी सुधार हुआ है । उस साल हमारे

निर्यात में 22 प्रतिशत की वृद्धि हुई । 1973-74 के पहले आठ महिनों में कई प्रकार के प्रतिबन्धों के बावजूद, निर्यात में 20.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। हमें विश्वास है कि और ज्यादा राष्ट्रीय प्रयास से निर्यात काफी बढ़ाए जा सकते हैं।

5. इसी प्रकार करीब दो साल पहले हमारे सार्वजनिक उद्यमों में लगातार घाटा चिन्ताजनक था। यह संतोष की बात है कि सरकार के प्रयत्नों के कारण हमारे केन्द्रीय सार्वजनिक प्रतिष्ठानों ने कुल मिलाकर अपने उत्पादन में वृद्धि की है और 1972-73 में पहली बार मुनाफा कमाया है । इस साल स्थिति और अच्छी होने की आशा है । सामान्य रूप से क्षमता का उपयोग बढ़ेगा, कुछ यूनिटों में मुनाफे ज्यादा होने की आशा है और दूसरे यूनिटों के घाटे में भारी कमी होगी ।

6. बढ़ती हुई कीमतें और खाद्यान्नों की कमी, विशेषकर अभावग्रस्त राज्यों में, जनसाधारण और सरकार के लिये चिन्ता का मुख्य विषय है । आशा थी कि 1973 की खरीफ की अच्छी फसल से कीमतों में स्थिरता आने में मदद मिलेगी । लेकिन ऐसा नहीं हुआ । इसका एक कारण आंतरिक मुद्रा स्फीति है । साथ ही, योजना कार्यक्रमों की लागत और सुरक्षा की जरूरतों पर व्यय को बिना कम किए पहले की अपेक्षा सूखाग्रस्त इलाकों में लोगों के लिए बहुत बड़े पैमाने पर काम और सहायता की व्यवस्था करने के कारण सरकार के घाटे की अर्थव्यवस्था में वृद्धि जरूरी हो गई । अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संकट का भी हमारे देश पर असर पड़ा है । दुनिया के विभिन्न भागों में राष्ट्रों के बीच तनाव कम करने की दिशा में किए गए उपायों से विकासशील देशों की तेज प्रगति के लिए अनुकूल वातावरण की आशा हुई थी । लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति से नई और जटिल समस्याएं उत्पन्न हुई हैं । अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा संकट और फिर कई वस्तुओं के दामों में भारी वृद्धि से भारत जैसे गरीब देशों पर दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक असर पड़ा है । पिछले कुछ महीनों में लगभग उन सभी चीजों के दाम दो-चार गुना बढ़ गए हैं, जिन्हें हमें बाहर से मंगाना पड़ता है, जबकि हमारे अपने निर्यात की चीजों के दामों में यदि वृद्धि हुई भी है तो केवल नाम मात्र की ।

7. इन घटनाओं से उत्पन्न गंभीर स्थिति, जमाखोरी , अनैतिक व्यापारियों की सट्टेबाजी तथा प्रबन्धकों की भूलों और संगठित वर्गों और गुमराह लोगों से उत्पादन, संचालन और वितरण में जो रुकावटें हुई हैं उनसे और भी बिगड़ गई है । उत्पादकों तथा समृद्ध उपभोक्ताओं द्वारा स्टाक भी जमा किये जा रहे हैं । हमारी जनता के इन सभी वर्गों को यह समझना चाहिये कि यदि हमारे राष्ट्र का ही अस्तित्व न रहा तो हम सब कहां रहेंगे? हिंसा और बन्द से स्थिति बिगड़ती ही है; और सबसे अधिक कष्ट होता है गरीब समुदाय को । जमाखोरी तथा उत्पादन, संचालन और वितरण में रोड़ा अटकाने के प्रयासों के खिलाफ सरकार कड़ी कार्यवाही करेगी ।

8. अनाजों की पर्याप्त मात्रा में वसूली से ही कमी वाले इलाकों, तथा समाज के अत्याधिक कमजोर वर्ग समुदाय के लिए सार्वजनिक प्रणाली से वितरण व्यवस्था कायम रखी जा सकती है । उत्पादन लागत में वृद्धि के कारण किसानों की क्षतिपूर्ति के लिए सरकार ने इस वर्ष खरीफ अनाजों की वसूली कीमतों में काफी वृद्धि की । हालांकि कई राज्यों में चावल की वसूली संतोषजनक है, यह दुर्भाग्य की बात है कि मोटे अनाजों की वसूली तेजी से नहीं हो रही है। खरीफ की वसूली अभी कई महीनों तक चलेगी । सरकार ने विस्तार से एक-एक राज्य की स्थिति का अध्ययन किया है और राज्य सरकार द्वारा जो उपाय किए जाने हैं उनके बारे में उन्हें सलाह दी है। आगामी रबी की वसूली और वितरण में सुधार लाने के लिए इस साल के अनुभवों को पूर्णरूप से ध्यान में रखा जाएगा । मैं राज्य सरकारों से यह बात विशेष रूप

से कहना चाहूंगा कि वसूली लक्ष्यों की प्राप्ति बहुत महत्वपूर्ण है । हमें इस बात को भली भांति समझना चाहिए कि जिस मात्रा में राज्य सरकारें अनाज की वसूली करके उसे मुहैया कराती है, केन्द्रीय सरकार उसी के अनुसार उसका वितरण कर सकती है । इसलिये सभी राज्य सरकारों को, चाहे वे बेशी वाले राज्य हों या कमी वाले (जहां बेशी वाले क्षेत्र भी हैं), इस मामले को और जमाखोरी तथा तस्करी रोकने पर सर्वाधिक महत्व देना चाहिए ।

9. विश्व मानकों को देखते हुए हमारा तेल का खर्च बहुत कम है । फिर भी, कच्चे तेल की बढ़ी कीमतों से हमें एक साल में आठ सौ करोड़ रुपए का अतिरिक्त बोझ विदेशी मुद्रा में उठाना पड़ेगा। यह हमारी अर्थव्यवस्था के लिए अभूतपूर्व चुनौती है ।

10, तेल उत्पादक देशों की इस चिन्ता को हम समझ सकते हैं कि उनके रिजर्व समाप्त न हों जाएं । साथ ही, हम यह भी समझते हैं कि वे अपने तेल के निर्यात से प्राप्त राजस्व से अपनी अर्थव्यवस्था में विविधता और मजबूती लाना चाहते हैं । अन्तर्राष्ट्रीय तेल व्यापार के क्षेत्र में, जिस पर अब तक तेल कम्पनियों का नियंत्रण था वे स्वयं महत्वपूर्ण भाग लेने का प्रयास कर रहे है । इसमें हम उनका समर्थन करते हैं । तेल निर्यात करने वाले देशों के साथ हमारे सौहार्दपूर्ण संबंध है, भारत जैसे विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था पर तेल की बढ़ी कीमतों का जो असर पड़ा है उसे पश्चिम एशिया के मित्र देश समझते हैं । हमें इस बात का सुनिश्चित करने के उपाय करने हैं कि इन देशों की यह भावना ठोस रूप में परिणत हो सके । हम तेल उत्पादक देशों के साथ निकट संपर्क बनाए हुए हैं और हमें आशा है कि पारस्परिक प्रबंधों द्वारा हम उचित हल निकाल लेंगे ।

11. हमारे पास कोयले के संतोषजनक रिजर्व हैं और जलविद्युत् शक्ति की विशाल क्षमता है। हमारे पास न्यूक्लीय विद्युत् उत्पादन के लिए उपकरण हैं । हमें आशा है कि तेल खोज करने के हमारे प्रयास सफल होंगे । थोड़ा समय और जरूरी संसाधन मिलने पर हम अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए इनका विकास करने में समर्थ होंगे । लेकिन बीच का समय कठिन होगा जिसमें एक ओर तो हमें पूर्ण अनुशासित ढंग से प्रयास करने होंगे और दूसरी ओर हमारे मित्र देशों को हमारी कठिनाइयों से सहानुभूति रखनी होगी ।

12. सरकार ऊर्जा के अपने देशी स्रोतों का विकास करने तथा निर्यात से अपनी आय बढ़ाने का जोरदार प्रयास कर रही है : इस प्रयास की सफलता के लिए जरूरी है कि ऊर्जा के अपने स्रोतों तथा निर्यात करने की दृष्टि से स्थापित उद्योगों से ज्यादा और अच्छा उत्पादन हो, तेल से बनी चीजों का कम से कम इस्तेमाल हो और निर्यात की जाने वाली चीजों के घरेलू उपयोग पर नियंत्रण रखा जाए। मैं जनता के सभी वर्गों से अपील करता हूं कि सरकार द्वारा किए जाने वाले उपायों के साथ पूरा सहयोग दें ।

13. समुद्री तट पर और उससे दूर तेल की खोज तेजी से की जाएगी । तट से दूर एक स्थान पर तेल की खोज शुरू हो गई है तथा इस काम में और तेजी लाई जाएगी । हमने ईरान में कच्चे तेल के उत्पादन के लिए पहले ही संयुक्त प्रयास शुरू कर दिया है । ईराक में तेल और प्राकृतिक गैस कमीशन ने संभावित क्षेत्रों में तेल खोजने का काम शुरू कर दिया है । दूसरी जगहों पर भी इस प्रकार के काम विचाराधीन हैं ।

14. बिजली पैदा करने की योजनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी । वर्तमान यूनिटों की कार्य-प्रणाली में सुधार लाने, तथा उन परियोजनाओं को शुरू करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिनका

निर्माण काफी हद तक हो चुका है । इससे बिजली की उपलब्धि में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त, पांचवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में बहुत सी परियोजनाओं पर काम शुरू करके उन्हें पूरा किया जाएगा। इन परियोजनाओं को आवश्यक स्वीकृति दे दी गई है । विभिन्न थरमल प्लान्टों के लिए उन कोयला क्षेत्रों को, जहां से कोयला पहुंचाना है, निर्धारित करके विशेष परियोजनाओं के साथ संबंधित कर दिया गया है । कोयला क्षेत्रों, परिवहन और विद्युत् संयंत्रों के समन्वित विकास को सुनिश्चित किया जाएगा। इस विशाल कार्यक्रम के लिए विद्युत् उद्योग का पुनर्गठन जरूरी है ।

15. आर्थिक विकास के निर्धारित लक्ष्यों को तेल की बढ़ी कीमतों से अलग रखने के हमारे प्रयास तभी सफल हो सकते हैं जबकि कोयले का उत्पादन बढ़ाया जाए और एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की अच्छी सुविधा हो । खान और रेल विभाग को विभिन्न जरूरतमन्द स्थानों पर कोयला पहुंचाने के लिए कटिबद्ध होना होगा । राज्य सरकारें अपनी ओर से इस बात का प्रबन्ध करें कि बिजली तथा सड़कों जैसी मूल सुविधाएं उपलब्ध हो रही हैं । प्रबन्धकों तथा खान और रेलवे में काम करने वाले पन्द्रह लाख श्रमिकों पर एक भारी जिम्मेदारी है । उनके सहयोग से 1974-75 में कोयले का उत्पादन कम से कम 900 लाख टन तक पहुंचा जाएगा । और उद्योगों को सुचारू रूप से चलाए रखने के लिए कोयला मिलता रहेगा ।

16. वर्तमान स्थिति में, जनता के प्रति हमारी यह जिम्मेदारी है कि उत्पादन को, विशेषकर अनिवार्य क्षेत्रों में, बनाये रखा जाये। हाल के महीनों में श्रमिकों को काफी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। इनके बावजूद, हमारे श्रमिक, जिनकी देशभक्ति की गर्वपूर्ण परम्परा है, यह अच्छी तरह जानते हैं कि स्थिति तभी सुधर सकती है जब कि उत्पादन संबंधी सामाजिक कार्य विशाल राष्ट्रीय संदर्भ में देखे जायें। इसलिये श्रमिकों को भरसक प्रयत्न करना है कि उत्पादन बढ़े, संचालन की गति तेज हो और उसमें किसी प्रकार की रुकावट न आयें। यही एक रास्ता है जिससे वह जनसाधारण को अभाव से छुटकारा दिलाने में योगदान दे सकते हैं।

17. पांचवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारूप में खाद्य और ईंधन की समस्याओं का सामना करने का आधार और कार्यक्रम निहित है। कृषि क्षेत्र की नीति नई तकनीक को लागू करने और उत्पादन के आधार को विस्तार करने पर खड़ी की गई है। इसमें एक ओर सिंचाई के अग्रणी तथा सीमांत क्षेत्रों के विकास कार्यक्रमों पर बल दिया गया है और दूसरी ओर छोटे किसानों के कार्यक्रमों पर। परिणामतः उत्पादन वृद्धि का वितरण विभिन्न क्षेत्रों और जनता के विभिन्न वर्गों में अधिक व्यापक हो सकेगा। यह योजना बिजली कोयले तेल परिवहन तथा रासायनिक खाद जैसे उद्योगों को विशेष महत्व देती है जो कृषि के प्राणाधार हैं। कई क्षेत्रों में योजना के अधिकांश उत्पादन लक्ष्य इस धारणा पर आधारित हैं कि वर्तमान क्षमताओं का पूरा और अधिक कुशलता से उपयोग होगा। नये निवेश की तरह यह भी योजना का एक अंग है।

18. पहली बार पिछड़े क्षेत्रों जिनमें पहाड़ी तथा जनजातीय क्षेत्र शामिल हैं, के विकास के लिये राज्य की योजना के सम्पूर्ण ढांचे में संगठित उप-योजनाएं तैयार की जा रही हैं जिससे हमारी जनता के सभी वर्गों के लोगों के लिये प्राथमिक शिक्षा स्वास्थ्य, पीने के पानी आवास, गन्दी बस्तियों की सफाई, ग्रामीण सड़कों तथा ग्रामीण विद्युतीकरण की व्यवस्था हो सके और सामाजिक उपभोग के न्यूनतम स्तर तक वे पहुंच सकें। क्षेत्रीय स्तर पर, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, आहार, शिक्षा और समाज कल्याण के अन्तर्गत सेवाएं संगठित करने के प्रयत्न किये जायेंगे।

19. हमारे लोकतन्त्र की परिपक्वता का यह एक माप है कि वर्तमान आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद, इस महीने हमारी जनता का पांचवां हिस्सा राज्य विधान सभाओं के चुनावों में वोट डाल रहा है। मैं सभी राजनीतिक दलों से अपील करता हूं कि वे इन चुनावों को शांतिपूर्वक सम्पन्न करायें। हमें इस संबंध में अपने रिकार्ड पर गर्व है, क्योंकि स्वतन्त्र और शांतिपूर्ण चुनाव स्थायी लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। सफल लोकतंत्र केवल इस बात पर निर्भर नहीं करता कि चुनने की स्वतंत्रता हो, बल्कि इस बात पर भी कि सबको यह विश्वास हो कि आपसी मतभेद के बावजूद, सत्तारूढ़ और विरोधी दलों के लिये एक आधारभूत आचारसंहिता का पालन करना ज़रूरी है जिसमें कि किसी भी रूप में हिंसा और गैर-संवैधानिक तरीकों का कोई स्थान न हो।

20. इस महीने के शुरू में गुजरात में राष्ट्रपति का शासन लागू किया गया है। सभी नागरिकों की यह जिम्मेदारी है कि ऐसा वातावरण स्थापित करने में मदद करें जिसमें आत्म-संयम और सामूहिक प्रयासों को बढ़ावा मिले ताकि लोगों की कठिनाइयों को कम किया जा सके।

21. समीक्षाधीन वर्ष में, हमने विदेश नीति पर प्रभावशाली ढंग से कार्य किया और हमें कुछ महत्वपूर्ण सफलतायें मिलीं। हमारे पड़ोसी देशों, विशेष रूप से बंगला देश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, बर्मा तथा अफगानिस्तान के साथ शांति, मित्रता और आपसी हित के सहयोग की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

22. 1971 की लड़ाई के बाद, पाकिस्तान, बंगला देश और भारत में फंसे लोगों की मानवीय समस्या भारत और बंगला देश द्वारा की गई ऐतिहासिक पहल के परिणामस्वरूप संतोषजनक रूप से सुलझाई जा रही है। पिछले सितम्बर में तीनों देशों से देश प्रत्यावर्तन का काम साथ-साथ शुरू हुआ और इस साल के मध्य से पहले यह काम पूरा हो जाने की आशा है। मेरी सरकार शिमला समझौते के बाकी मुद्दों को लागू करने के लिये पाकिस्तान के साथ विचार-विमर्श के लिये तैयार है। हमें पूरी आशा है कि पाकिस्तान सरकार भी यही चाहती है।

23. बंगला देश के साथ आपसी हित के सभी मामलों पर हमारी निरंतर बातचीत होती रहती है। दोनों देशों की सरकारों ने मित्रतापूर्ण संबंध और वाणिज्यिक और आर्थिक क्षेत्रों में सहयोग को और बढ़ाने के लिये ठोस प्रयत्न किये हैं।

24. मुझे यह कहते हुये खुशी हो रही है कि हमारे देश की प्रधान मंत्री और श्रीलंका की प्रधान मंत्री की एक दूसरे देश की यात्रा से दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध और सहयोग बढ़े हैं। श्रीलंका में सभी भारतीय मूल के लोगों की स्थिति की समस्या का हल अन्तिम रूप से निकाल लिया गया है और अन्य प्रश्नों को सुलझाने की दिशा में भी काफी प्रगति हुई है।

25. हमारी प्रधान मंत्री की नेपाल यात्रा और नेपाल नरेश तथा महारानी की भारत यात्रा हमारे दोनों देशों के बीच निकट संबंध का प्रतीक है। यह संबंध पारस्परिक विश्वास और समान हितों पर आधारित हैं। हम नेपाल सरकार की इस बात की बहुत सराहना करते हैं कि उन्होंने अपनी जनता के आर्थिक और सामाजिक हितों के लिये काम करने का संकल्प किया है। यह हमारा सौभाग्य है कि नेपाल सरकार की इच्छानुसार हम इस काम में हिस्सा ले रहे हैं।

26. अफगानिस्तान के साथ हमारे मित्रतापूर्ण संबंध कई क्षेत्रों में आपसी सहयोग से और बढ़ रहे हैं तथा मजबूत हो रहे हैं। अफगानिस्तान में ऐसी कई परियोजनाएं हैं, जिनमें हम अपने तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत हिस्सा लेने में समर्थ होंगे।

27. मार्च 1973 में, अपनी मलयेशिया यात्रा के दौरान, मैंने इन्डोनेशिया, मलयेशिया, फिलिपिन्ज़, थाईलैंड और सिंगापुर की नवम्बर, 1971 की घोषणा का समर्थन किया था। मैंने उस अवसर पर कहा था कि दक्षिण-पूर्व एशिया शांति और तटस्थता का क्षेत्र रहना चाहिये। इस क्षेत्र के अन्य देशों से हमने हमेशा यह आग्रह किया है कि हिन्द महासागर बड़े देशों के सैनिक अड्डों से मुक्त रह कर शांति का क्षेत्र रहे। इस बात पर संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा और पिछले साल अल्जीयर्स में हुये गुटनिरपेक्ष देशों के सम्मेलन में बल दिया गया है। इसलिये हमारे लिये यह गहरी चिन्ता और असंतोष का विषय है कि युनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरीका ने हिन्दमहासागर के डिगो गार्सिया द्वीप में एक सैनिक अड्डा बनाने पर समझौता किया है। हमारा विचार है कि सैनिक अड्डा कायम करना शांति के हितों के विरुद्ध है। अतः हमारी पूरी आशा है कि इस क्षेत्र के लोगों तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ की इच्छा इस मामले में सर्वोपरि होगी।

28. हम पश्चिम एशिया के देशों के साथ अपने मित्रतापूर्ण संबंधों को अत्यधिक महत्व देते हैं। विकासशील देशों के बीच बढ़ते हुये आर्थिक आदान-प्रदान की भूमिका में हम इन संबन्धों को आगे बढ़ा रहे हैं। हमने ईराक गणराज्य के साथ समझौता किया है जिनमें इस प्रकार के सहयोग के कई क्षेत्र शामिल हैं। तेल की कीमतों में वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं का समाधान निकालने में ईराक ने जो अनुकूल रवैया अपनाया वह भारत और ईराक के बीच बढ़ती मित्रता का परिचायक है।

29. हमारा विचार है कि पश्चिम एशिया में स्थायी शांति तब तक स्थापित नहीं हो सकती, जब तक सभी अधिकृत क्षेत्रों से इज़राइली सेना नहीं हटा ली जाती, और फिलिस्तीन में अरब जनता को फिर से अधिकार दिलाने की बात तो सर्वविदित है। हाल ही में, कुछ अच्छी घटनाएं घटी हैं और हमें आशा है कि पश्चिमी एशिया शांति सम्मेलन से इस क्षेत्र में स्थायी शांति और स्थिरता कायम होगी।

30. हाल ही में, ईरान और हमारे बीच उच्च-स्तरीय प्रतिनिधि-मण्डल की यात्राओं से हम दोनों देश एक दूसरे की नीतियों को अधिक अच्छी तरह समझ सकते हैं। आपसी हित और सहयोग के अनेक नये मार्ग प्रकट हुये हैं जिनपर सरकार निष्ठा के साथ अग्रसर होगी।

31. सोवियत संघ के महासचिव श्री ब्रेझनेव नवम्बर, 1973 में भारत की यात्रा पर आए। हमें उनके साथ विचार-विनिमय करने का मौका मिला और हमने समझौतों पर हस्ताक्षर किये जिनसे हमारे संबंधों में एक और नया अध्याय जुड़ा है। इन समझौतों से दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को दीर्घकालीन आधार मिला है। हमें संतोष है कि भारत सोवियत मित्रता और सुदृढ़ हुई है तथा इनके बीच सहयोग के नये आयाम प्रकट हुये हैं।

32. जून, 1973 में प्रधान मंत्री ने युगोस्लाविया की यात्रा की। अक्तूबर, 1973 में, मैंने रुमानिया और चेकोस्लोवाकिया की यात्रा की। इस साल के अन्त में हमने चैकोस्लोवाकिया के महासचिव डा० गुस्ताव हुसाक का स्वागत किया और चैकोस्लोवाकिया के साथ आर्थिक सहयोग पर एक समझौता हुआ। पिछले महीने राष्ट्रपति टीटो की यात्रा से गुटनिरपेक्षता देशों पर असर पड़ने वाली हाल की घटनाओं के संबंध में विस्तार-पूर्वक विचार-विमर्श करने का एक और मौका मिला।

33. हमारी और संयुक्त राज्य अमरीका की सरकारों की ओर से समानता और आपसी हित के आधार पर संबंध मजबूत करने के सचेत प्रयत्न किये जा रहे हैं। भारत में संयुक्त राज्य के रुपये फण्ड के प्रश्न पर हाल ही में हुआ समझौता इसका एक महत्वपूर्ण परिणाम है।

34. यूरोपीय आर्थिक समुदाय के साथ वाणिज्यिक समझौता संपन्न होना एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे इस विशाल समुदाय के साथ हमारे संबंधों की अच्छी शुरूआत हुई है। हमें विश्वास है कि आगामी वर्षों में इस समुदाय और भारत के बीच व्यापारिक और आर्थिक सहयोग बढ़ेगा।

35. राष्ट्रपति के दो सदस्य देशों—आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड—के प्रधान मंत्रियों की यात्रा के दौरान विचार-विनिमय से विश्व के मामलों पर इन नेताओं के विवेकपूर्ण रवैये, शांति में आस्था और भारत तथा एशिया के अन्य देशों में बढ़ती हुई रूचि का पता चला। जून, 1973 में प्रधान मंत्री की कनाडा यात्रा से दोनों देशों के संबंध और मजबूत हुये हैं।

36. अफ़्रीकी देशों के साथ हमारे संबंध निकट और सहयोगपूर्ण हैं। उपराष्ट्रपति ने हाल ही में तंजानिया की यात्रा की और जंजीबार में क्रांति की दसवीं वर्षगांठ में हिस्सा लिया। नये राज्य गिनी-बिसाओ की स्थापना का हम स्वागत करते हैं, जो उपनिवेशवाद और जातिवाद के विरुद्ध अफ़्रीकी जनता के संघर्ष में हमारे सुविदित समर्थन के अनुरूप है।

37. अन्य गुटनिरपेक्ष देशों के साथ निकट सहयोग, हमारी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण अंग है। सितम्बर 1973 में प्रधान मंत्री ने अल्जीयर्स में गुटनिरपेक्ष देशों के चौथे शिखर सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन ने राजनितिक क्षेत्र में अधिक सहमति तथा सदस्य देशों का एक दूसरे के साथ ज्यादा सहयोग करने में संकल्प का परिचय दिया।

38. सम्माननीय सदस्यगण! विश्व के देशों में संबंधों के आधार और स्वरूप तेजी से बदल रहे हैं और इसी प्रकार कई विचार भी जिन्हें पिछले दो दशकों में महत्व दिया जा रहा था। फिर भी यह सन्तोष का विषय है कि आज़ादी के बाद से अब तक हमारी विदेश नीति के आधारभूत सिद्धांतों को हमेशा समर्थन प्राप्त हुआ है।

39. इस अधिवेशन में आप अगले वित्तीय वर्ष के अनुदानों की मांगों, गतवर्ष के शेष तथा नये विधायी कार्यों पर विचार करेंगे। सरकार संसद के समक्ष खाद्य पदार्थों में मिलावट रोकने के अधिनियम में संशोधन करने के लिए एक विधेयक पेश करेगी जिससे यह और भी प्रभावी तरीके से लागू किया जा सके। अन्य विधेयकों में से हैं : पांडिचेरी और हैदराबाद में केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना के विधेयक, संविधान की 9वीं अनुसूची में और संशोधन लाने का एक विधेयक, और कृषि पुनर्वित्त अधिनियम को संशोधन करने का एक विधेयक, जिससे यह क्षेत्र विकास निगमों को प्रत्यक्ष रूप से सहायता दी जा सके।

40. सम्माननीय सदस्यगण! मैं 1974 के कठिन कार्यों के लिए आपका आह्वान करता हूं। राष्ट्र के सामने जो बड़ी चुनौती है उसे कृतसंकल्प जनता ही सुयोग के रूप में बदल सकती है। मुझे जरा भी संदेह नहीं है कि जनता के प्रतिनिधि के रूप में, निष्ठा और रचनात्मक सहयोग की भावना से आप इस काम में उचित मार्गदर्शन देंगे और यह देश वर्तमान कठिनाइयों को पार कर के अपने चुने हुए रास्ते पर और भी मजबूती से और संगठित होकर आगे कदम बढ़ायेगा।

PRESIDENT'S ADDRESS

Honourable Members,

You reassemble at a time of difficulty and trial. The people face many hardships as a result of high prices, scarcity of essential commodities and interruptions in production

and supply caused by strikes, *bundhs* and unrest, which in some parts of the country have taken a violent turn. The international oil crisis has cast an uneasy shadow on the economy. These unforeseen events have undoubtedly slowed down the pace of our social and economic development. In this situation, the people's mood is one of understandable anxiety. I have deep sympathy with the people, particularly the poor sections, who have had to suffer.

2. Seldom has a country faced such gigantic problems in quick succession, year after year as we have these last three years. It has been a continuous testing of the nation's mettle. The nation has survived these difficulties and has not allowed them to come in the way of its basic endeavours towards development. This is no mean achievement and should not be ignored, even though positive aspects are apt to be overlooked in difficult times.

3. There have been a number of welcome developments. One of these is the manner in which the people of Andhra Pradesh have solved the problem of intra-regional tensions which only a year ago appeared insurmountable. I congratulate all sections of the people of that State on the wisdom and sprit of accommodation which they displayed. The six-point formula which has been evloved should lead to fuller integration and to the accelerated development of the backward areas of the State.

4. Two other hopeful trends are in the economic sphere : the rise in export earnings and the improvement in the performance of public undertakings. Until about two years ago, the low rate of growth of our exports was a cause for considerable anxiety. However, since 1972-73, there has been a marked improvements. In that year, our exports increased by 22%. In the first eight months of 1973-74, despite a variety of constraints, exports have increased by 20.8%. We are confident that with a greater national effort, exports can be pushed up substantially.

5. Only about two years ago, the continuing losses of our public enterprises were a cause for concern. It is, therefore, a matter of satisfaction that consequent to a number of measures taken by Government, our Central public undertakings, taken together, have increased their production and earned a net profit for the first time in 1972-73. This year the position is expected to be much better. The utilisation of capacity will generally increase, the profits of some units are expected to be higher and in others the losses will be considerably reduced.

6. The rise in prices and the scarcity of food articles, particularly in deficit States, is of prime concern to the people and the Government. The expectation that the good *kharif* harvest of 1973 would help to stabilise prices has not materialised. Partly, this is due to the internal inflationary situation. The provision of work and relief on a hitherto unprecedented scale to the people of drought affected areas, without jettisoning investment on Plan programmes and the requirements of defence, has necessitated increased deficit financing. The situation also reflects the effect of the international economic crisis on our country. The stepts towards detente between nations in differents parts of the globe had raised hopes of a favourable climate for the speedy progress of developing nations. However, the international economic situation has created new and complex problems. The international monetary crisis, followed by the steep rise

in the prices of many commodities, has affected poorer countries like India more than others. The prices of almost all commodities that we have to import have gone up by two to four times in the past few months, while the prices of our own exports have risen, if at all, only marginally.

7. The serious situation created by these developments has been aggravated by hoarding and speculation by unscrupulous traders and by interruptions in production and movement caused by lapses on the part of management and by some misguided sections of organised classes. Stocks are also being hoarded by producers and affluent consumers. All these sections of our people must realise that they cannot survive unless the nation as a whole survives. Resort to violence and *bundhs* only worsens the situation. The poor suffer the most. Government will deal firmly with hoarding and with attempts to interrupt production, movement and distribution.

8. Supplies to deficit areas and vulnerable sections of society can be maintained through the public distribution system only if there is adequate aprocurement of grains. Appreciating the need to compensate the farmer for the rise in the cost of production, Government increased procurement prices substantially for the current *kharif* cereals. While the procurement of rice is satisfactory in many States, it is unfortunate that the procurement of coarse grains did not gather momentum. The *kharif* procurement season has still several months to go. The situation has been studied in detail, State by State, and Government has indicated the steps to be taken by State Governments. This year's experience in procurement and distribution will be fully considered in taking corrective action for the coming *rabi* season. I wish to impress upon the State Governments, with all the earnestness at my command, the importance of achieving procurement targets. It has to be realised that the Central Government can distribute only as much quantity as the State Governments procure and make available to it. Therefore, all State Governments whether they be of surplus or deficit States (which also have surplus areas), should give over-riding importance to this matter and to the checking of hoarding and smuggling.

9. Judged by world standards, we consume very little oil. Yet the increased prices of crude oil alone will cast on us an additional burden of rupees eight hunderd crores a year in foreign exchange. This poses an unprecedented challenge to our economy.

10. We can understand the anxiety of oil producing countries to conserve their depleting reserves of crude. We also appreciate their desire to strengthen and diversify their economies through investments financed by larger revenues from their exports of oil. We extend our support fully to them in their efforts to secure a dominant role in the international trade in oil which has hitherto been controlled by a handful of private oil companies. We have cordial relations with oil-exporting countries. The adverse impact of the rise in oil prices on the economies of developing countries like India is recognised by the friendly countries in Western Asia. We have to devise ways and means of insuring that this genuine concern is adequately reflected in concrete measures. We are in close touch with oil producing countries and hope that we can find just solutions through appropriate mutual arrangements.

11. We have satisfactory reserves of coal and a sizable potential of hydro-electric power. We possess the technology for nuclear power generation. We are hopeful that our efforts at oil exploration will yield results. Given a little time and the necessary resources, we should be able to develop these to meet our needs. But the intervening years will be difficult and will call for the most disciplined effort on our part and under-standing from our friends.

12. Government is organising a massive effort to develop our indigenous sources of energy and to maximise our earnings from exports. Efficient and increased production of our own sources of energy and of export -oriented industries, utmost economy in the use of oil products and selective restraints on domestic consumption of exportable goods are essential for the success of this effort. I appeal to all sections of the people to co-operate fully with the measures that will be taken by Government.

13. The search for oil, on-shore and off-shore, will be pursued with vigour. The exploration which has begun in one off-shore area will be intensified. We have already a joint venture for production of crude oil in Iran. The Oil and Natural Gas Commission has started exploration in a prospective area in Iraq and similar ventures elsewhere are under consideration.

14. Schemes for the generation of power will be given high priority. Special attention is being paid to improving the working of existing units and the earlier commissioning of projects which are in an advanced state of construction. This will add a sizable quantum of power. In addition, a large number of projects are to be taken up and completed during the Fifth Five Year Plan period. The necessary approvals for these projects have been given and in the case of thermal plants, the coal fields from which coal will be supplied have been identified and linked up for particular projects. A coordinated development of coal fields, transportation and power plants will be ensured. This massive programme calls for the reorganisation of the electricity industry.

15. The key to the success of our efforts in insulating our projected targets of economic growth from the rise in prices of oil lies in larger production and transport of coal. Department of Mines and the Railways have to gear themselves to the task of raising and moving the coal to various centres of consumption. The State Governments on their part should ensure that necessary basic facilities like power and feeder roads are made available. A great responsibility rests on the managements and the one and a half million workers of the mines and the Railways. With their co-operation, the production of coal will be increased in 1974-75 to 90 million tonnes, if not more, and a steady flow will be maintained to keep the wheels of industry running smoothly.

16. In the present situation, the maintenance of production, particularly in essential sectors, is an obligation we owe to our people. In recent months, the workers have been experiencing considerable economic difficulties. In spite of this, our workers, who have a proud heritage of patriotism, know very well that the situation can be improved only if the social tasks of production are viewed in the larger national perspective. Therefore, workers have to make a supreme effort to increase production and to ensure quick and uninterrupted movement. This is the only way in which they can contribute to relieve the shortages faced by the common people.

17. The Draft Fifth Five Year Plan provides the framework and the programme to tackle the twin problems of food and fuel. The strategy for agriculture is based on a combination of the application of new technology and widening the base of production. The emphasis is on programmes for command areas and marginal areas on the one hand and for the small farmers on the other, so that the very process of increased production ensures wider distribution regionwise as well as between different sections of the people. The Plan gives special importance to the development of power, coal, oil and tranports and of industries like fertilizers which are vital for agriculture. In a number of sectors, a large part of the out-put levels envisaged in the Plan is based on the assumption of full and more efficient utilisation of existing capacities. This is as much a part of the Plan as new investment.

18. For the first time integrated sub-plans are being prepared within the overall framework of State Plans for the development of backward areas, including hill and tribal areas, so that all sections of the people achieve certain minimum levels of social consumption in elementary education, rural health, drinking water, provision of home sites, slum clearance, rural roads and rural electrification. The endeavour will be to integrate the services under health, family planning, nutrition, education and social welfare at the field level.

19. It is a measure of the maturity of our democracy that notwithstanding the present economic difficulties, a fifth of our population is exercising franchise this month in elections to State assemblies. I appeal to all political parties to ensure peaceful conduct of the elections. We are proud of our record in this regard, as free and peaceful elections constitute an important feature of a stable democracy. Successful democracy consists not only of the freedom to choose but of a realisation and that in spite of differences, the parties in power and in opposition abide by certain basic rules of conduct, the more important of which is the avoidance of all forms of violence and extra-constitutional methods.

20. Early this month, Gujarat has come under President's rule. It is the responsibility of all citizens to help in the establishment of a climate of self-restraint and co-operative effort so that the people's hardships can be alleviated.

21. In the year under review, our foreign policy was pursued with vigour and registered some notable successes. Relations with our neighbours, particularly Bangladesh, Bhutan, Nepal and Sri Lanka, as also Burma and Afghanistan, saw noticeable improvement in building up a policy of peace, friendship and mutually beneficial co-operation.

22. The human problem of the persons stranded in Pakistan, Bangladesh and India after the conflict of 1971 is on the way to satisfactory resolution following the historic initiative taken by India and Bangladesh. The three-way simultaneous re-patriation began in September last and is expected to be completed before the middle of this year. My Government is prepared to enter into negotiations with Pakistan to implement the rest of the Simla Agreement. We sincerely hope that the Government of Pakistan also desires this.

23. We have maintained a constant dialogue with Bangladesh on all issues of mutual interest. The Governments of both the countries have made concerted efforts to further strengthen friendly relations and co-operation in commercial and economic fields.

24. I am happy to say that the exchange of visits by our Prime Minister and the Prime Minister of Sri Lanka has resulted in the activisation of economic relations and co-operation between the two countries. The question of the status of all persons of Indian origin in Sri Lanka has been finally resolved and considerable progress has been made in finding a solution to other questions.

25. The visit of our Prime Minister to Nepal and of the King and Queen of Nepal to India symbolised the close relations between us, which are based on mutual trust and commonality of interests. We admire greatly the resolve of the Government of Nepal to advance the economic and social interest of its people, a task in which we have been privileged to participate according to the wishes of the Government of Nepal.

26. Our friendly relations with Afghanistan are being developed and strengthened further by mutual co-operation in many fields. Several projects in which we will be able to participate under our technical and economic co-operation programme have been identified in Afghanistan.

27. During my visit to Malayasia in March, 1973, I had expressed our support to the Declaration of November, 1971 by Indonesia, Malaysia, Philipines, Thailand and Singapore that South-east Asia should be a Zone of peace neutrality. Along with other countries of the region, we have always urged that the Indian Ocean should be a zone of peace and should be free from military bases of big powers. This has been emphasised by the General Assembly of the United Nations and the non-aligned countries who met at Algeirs last year. It is, therefore, a matter of deep concern and disappointment to us that the United Kingdom and the United States of America have entered into an agreement for the establishment of a military base in the island of Diego Garcia in the Indian Ocean. We consider that the establishment of the military base is against the interests of peace and we sincerely hope that the wishes of the people of this region and of the United Nations will prevail in this matter.

28. We attach the greatest importance to our friendly relations with countries of West Asia. We are pursuing these in the emerging context of greater economic exchanges between developing countries. We have concluded agreements with the Republic of Iraq covering many fields of such co-operation. The growing friendship between India and Iraq is reflected in the positive response of Iraq in finding a solution to the problems arising from the rise in oil prices.

29. Our view that no stable peace can be established in West Asia without the vacation of Israeli aggression from all occupied Arab territories and the restoration of the rights of the Arab people of Palestine is well-known. There have recently been some positive developments and we hope that the West Asia Peace Conference will lead to lasting peace and stability in this region.

30. As a result of the high-level visits recently exchanged between Iran and us, there has been a better understanding of each other's policies and many new avenues of mutually beneficial co-operation have been identified. Government will pursue these vigorously.

31. Yet another milestone was reached in our relations with the Soviet Union with the exchange of views and the Agreements that were signed when we had the pleasure of playing host to General Secretary Brezhnev in November 1973. The Agreements put the economic relationship between the two countries on a long-term footing. We are gratified that Indo-Soviet friendship has progressively attained newer levels of maturity and co-operation.

32. In June 1973 our Prime Minister visited Yugoslavia. I paid a visit to Rumania and Czechoslovakia in October 1973. Later in the year, we welcomed General Secretary Dr. Gustav Husak of Czechosovakia and an agreement on economic cooperation was signed with Czechoslovakia.President Tito's visit last month gave yet another opportunity for a detailed exchange of views on recent developments affecting non-aligned countries.

33. There has been a conscious effort on the part of my Government and that of the United states of America to strengthen relations on the basis of equality and mutuality of interests. An important result of this is the agreement on the question of U.S. rupee funds in India.

34. The conclusion of the Commercial Co-operation Agreement with the European Economic Community is as ignificant step and with this, our relations with the enlarged Community have started well. We are confident that trade and economic co-operation between the Community and India will grow fast in the coming years.

35. The views exchanged during the visits of the prime Minister of two sister countries of the Commonwealth—Australia and Newzealand—indicated the enlightened stand of these leaders on world issues,their commitment to peace and their increasing interest in the development of India and other countries of Asia. The visit of our Prime Minister to Canada in June 1973 helped to further strengthen the close ties between the two countries.

36. Our relations with African countries are close and co-operative. The Vice-President visited Tanzania recently and participated in the tenth anniversary of the Revolution in Zanzibar. In line with our well-known support for the struggle of the African people against colonialism and racism, we hail the emergence of the new State of Guinea-Bissau.

37. Close co-operation with other non-aligned countries has been one of the important aspects of our foreign policy. The Prime Minister attended the Fourth Summit of non-aligned countries in Algiers in September 1973. The Conference demonstrated a large measure of agreement in the political field and also the resolve of member countries to co-operate with one another more concretely.

38. Hon'ble Members, the basis and nature of relationships between the countries of the world are changing rapidly; so also many concepts which held sway during the last two decades. amidst all this, it is a matter for satisfaction that the basic tenets of our foreign policy since Independence have been consistently vindicated.

39. During this session you will consider the demands for grants for the next financial year and the pending and new legislative business. Government will bring before parliament a Bill to amend the Prevention of Food Adulteration Act to enable more vigorous

enforcement. Among other measures are the Bills for establishing Central universities at Pondicherry and Hyderabad, a Bill to further amend the Ninth Schedule to the Constitution and a Bill to amend the Agriculture Refinance Corporation Act to enable it to extend assistance directly to Area Development Corporations.

40. Hon'ble Members, I summon you to the exacting tasks of 1974. The formidable challenges that the nation faces can be turned tinto an opportunity by a determined people. I have no doubt that as the representatives of the people, you will give the right lead in a spirit of dedication and constructive co-operation and that the country will overcome the present difficulties and emerge stronger and more united to advance along the chosen path.

निधन-संबंधी उल्लेख

OBITUARY REFERENCES

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों ; आज हम दो मास के बाद पुनः समवेत हुए हैं और मुझे हमारे दो मित्रों श्री कमल नाथ तिवाड़ी तथा श्री गणपत राव बापूराव दानी के निधन की सभा को जानकारी देने का अथवा दुखद दायित्व पूरा करना है ।

श्री कमल नाथ तिवारी बिहार के बेतिया चुनाव क्षेत्र से इस सभा के वर्तमान सदस्य थे । वह वर्ष 1970 से प्राक्कलन समिति के अध्यक्ष और वर्ष 1969 से अध्यक्ष मण्डल के सदस्य थे । वह 1962 से 1970 के मध्य तीसरी तथा चौथी लोक सभा के भी सदस्य थे । वह बड़े योग्य तथा सरल थे दबंग और मैत्रीपूर्ण थे और हमेशा बड़े हंसमुख रहते थे । तथा जब कभी वह सभा की अध्यक्षता करते थे सभा में व्यवस्था बनाये रखने का तथा चर्चाओं को सुनियोजित करते समय बड़े ही दृढ़ होते थे । वह क्रियाशील व्यक्ति थे तथा दूसरों को क्रियाशील देखना चाहते थे वह सरदार भगत सिंह के विश्वस्त और निकटतम सहयोगी थे । एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में उनकी गणना महान क्रांतिकारियों में की जा सकती है । उन्होंने व्यक्तिगत रूप से सत्याग्रही के रूप में वर्ष 1941 में कारावास भोगा और 1942 से 1946 तक नजर बन्द रहे । लाहौर षडयंत्र के मामले में उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड मिला था । एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा कृषक के रूप में उन्होंने किसानों हरिजनों तथा अन्य दलित वर्गों के कल्याण में गहन रुचि ली और वह अपने राज्य की अनेक सलाहकार तथा विकास समितियों के सदस्य रहे । विशाल अनुभव के स्वामी श्री तिवारी ने केवल एक प्रसिद्ध संसद सदस्य तथा प्राक्कलन समिति के सम्मानित सदस्य थे तथा साथ ही अध्यक्ष मण्डल के बड़े ही योग्य सदस्य थे। वह हमारे अत्यन्त लग्न वाले सदस्य थे तथा उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त था । अपनी नम्रता प्रगाढ़ संस्कृति साधुत्व तथा सज्जनता के लिये इस सभा का प्रत्येक वर्ग उन्हें प्यार करता था । उन्होंने अपने अन्तिम क्षण तक स्वयं को पूरे उत्साह के साथ अपने कर्तव्य पालन में जुटाये रखा । उनका निधन 17 जनवरी 1974 को हुआ । उनके निधन से हमने एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व को खो दिया और हम सबको उनकी कमी बहुत महसूस होगी ।

श्री गणपत राव बापु राव दानी वर्ष 1945-47 के दौरान केन्द्रीय संविधान सभा के सदस्य रहे थे । उनका निधन रायपुर में 27 दिसम्बर 1973 को हुआ ।

हम इन दोनों मित्रों के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हैं और मुझे विश्वास है कि यह सभा संतप्त परिवारों को अपनी संवेदना भेजने में मेरे साथ है ।

प्रधान मंत्री परमाणु ऊर्जा मंत्री इलेक्ट्रानिक मंत्री और अन्तरिक्ष मंत्री (श्रीमती इंदिरा गांधी) अध्यक्ष महोदय मैं बड़े शुद्ध मन से बोलने को खड़ी हुई हूं । हम सब श्री कमल नाथ तिवारी के निधन पर अत्यन्त दुःखी हैं । वह एक अनुभवी क्रांतिकारी थे उनका जीवन त्याग का एक लंबा इतिहास है उन्हें उस समय के भयावह काला-पानी का दण्ड भी भोगना पड़ा था । बाद में वह एक रचनात्मक और सजग और राजनीतिज्ञ बने । वस्तुतः ही अपने तरह के बड़े श्रेष्ठ सरल तथा सच्चे व्यक्ति थे तथा सामान्य जनता के हित में गहनता के साथ संलग्न रहे । समय समय पर उभरने वाली समस्याओं तथा देश के लिये पैदा होने वाले खतरों के प्रति वह सदैव बड़े सतर्क रहते थे । उनके व्यक्तिगत गुणों तथा इस सभा में और विभिन्न समितियों में उनकी सेवा के लिये सभा में सभी वर्ग उनके प्रति प्रगाढ श्रद्धा रखते थे । इस सभा की कार्यवाहियों में विशेष रूप से जबकि अध्यक्ष मंडल के सदस्य होने के नाते वह अध्यक्ष होते थे उनके निष्पक्ष और सुयोग्य ढ़ंग से कर्त्तव्य पालन को हम विशेष रूप से याद करते हैं ।

भगत सिंह के पहले साथी एक संवेदनशील सत्याग्रही एक सुप्रसिद्ध ससद पंडित तथा एक सम्मानित मित्र तथा सहयोगी के निधन पर हम गहरा दुःख व्यक्त करते हैं । उनका जीवन न केवल अपने दल के लिये बल्कि देश और उसकी प्रगति के लिये सदा क्रियाशील रहा । हम सब उनकी बहुत कमी महसूस करेंगे । मेरे लिये वह केवल एक मित्र ही नहीं बल्कि में कह सकती हूं कि वह एक मार्गदर्शी भी थे । इस सभा में अथवा बाहर देश के किसी भी भाग में ऐसी कोई धटना होती थी तो वे मुझे जब जानकारी देते थे और अपना मत भी व्यक्त करते थे कि इस संबंध में क्या किया जाये । जैसा कि मैंने कहा हम न केवल उनके महान गुणों बल्कि एक योग्य तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में भी उनकी बहुत बड़ी कमी महसूस करेंगे। उनके निधन के फलस्वरूप केवल संतृप्त परिवारों की बल्कि राष्ट्र की भी बड़ी क्षति हुई है ।

हमें श्री वी० बी० दानी के निधन पर भी बहुत दुःख है जोकि रायपुर चुनाव क्षेत्र से केन्द्रीय विधान सभा में प्रतिनिधित्व करते रहे । मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि आप हमारी हार्दिक संवेदनाऐं और श्रद्धांजलियां दुःखी परिवारों तक पहुंचा दें ।

श्री एच० एन० मुकर्जी (कलकत्ता–उत्तर पूर्व): अध्यक्ष महोदय मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से आप तथा प्रधानमंत्री द्वारा एक मित्र के निधन पर व्यक्त किए गए विचारों में शरीक होता हूं । श्री कमल नाथ तिवारी के निधन का समाचार सुनकर हमें दुःख हुआ । वह मेरे निकट के पड़ौसी थे । मृत्यु की इस दुःखदायी घटना को सुनकर उन्हें मृत्यु-शैया पर देखना ही मेरे भाग्य में बदा था और तब मुझे इस प्राचीन उक्ति की सत्यता की अनुभूति कि हुई कि जीवन कमल के पत्ते पर पड़ी बूंद के समान है जो सहसा ही ढुलक जाती है । वह संसद में प्राक्कलन समित के सभापति के रूप में सभापति-तालिका के सदस्य के रूप में तथा अन्य पदों पर हम सब के निकटतम सहयोगी थे । हम उन्हें तेजस्वी संपूर्ण दम्भरहित व्यक्तित्व के रूप में स्मरण रखेंगे । उन जैसा व्यक्ति मिलना दुर्लभ है । वह एक वीर स्वतन्त्रता सेनानी थे और देश के प्रति अपने संकल्प और समर्पण का मूल्य उन्होंने अन्डमान में बन्दी के रूप में अपने युवा जीवन के अधिकांश भाग को बिताकर चुकाया । मुझे याद है हालांकि बाद में उनके राजनीतिक एवं सामाजिक विचार भिन्न हो गए लेकिन एक समय ऐसा था जब वह उस साम्यवादी एकता दल के सदस्य थे, जो दल ऐसी समस्याओं के हल के लिये रास्ता ढूंढ़ रहा था

जो न केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता बल्कि आर्थिक पूर्णता की प्राप्ति से ही हल हो सकती थी। वह शान्त प्रकृति के व्यक्ति थे और सबका उनके प्रति मित्रतापूर्ण रवैया था। उन्होंने हर प्रकार से देश की स्वतन्त्रता, परम्परागत संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया और राजनीतिक नेता के रूप में उन्होंने जो कुछ किया वह अपने आप में अपूर्व था। ऐसे मानव का स्मरण न केवल सदन में अपितु सारे देश में किया जायेगा। मेरा अनुरोध है कि इस शोक संतृप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुंचा दी जाए।

Shri Atal Bihari Vajpayee (Gwalior): Mr. Speaker, Sir, one cannot believe that Shri Tiwary is no more in this world. At the end of last Session, he was happy and cheerful, when we departed. I had an opportunity to see him before he died. His sudden death has filled our hearts with deep grief.

No body could believe that a revolutionary will turn into an angel of peace in the latter part of his life. Inspite of political differences, he was affectionate to everybody.

While sitting on the chair, he remained firm. But there was a courtesy in his firmness which won the heart of everybody. His services as a chairman of Estimates Committee will be remembered forever.

Due to his death public life has suffered a great loss. I, on my own behalf and on be half of my party, pay my tributes to the sacred memory of departed soul and pray that God may give eternal peace to his soul.

I also pay tribute to the memory of late Shri Dani.

श्री पी० एम० महता (भावनगर) : मैं अपने तथा अपने दल की ओर से श्री कमल नाथ तिवारी और श्री गनपतराव बाबुराव दानी के निधन पर आप तथा सदन द्वारा व्यक्त किये गए विचारों में शरीक होता हूं। अपने जीवन के अधिकांश समय में श्री तिवारी क्रान्ति के लिये लड़ते रहे और कई कष्टों तथा अग्निपरीक्षाओं से गुजरे। सदन के सदस्य के रूप में उन्होंने किसानों के हितों का हमेशा पक्ष लिया और सदन में निर्भीकता तथा दृढ़ता से अपने विचार प्रकट किए। सदन के कार्य को चलाते हुये वह हमेशा न्यायप्रिय और उदार रहे।

प्राक्कलन समिति के सभापति होने के नाते उन्होंने विषयों पर चर्चा करने का पूरा अवसर तथा स्वतन्त्रता प्रदान की। ईश्वर दोनों की पुण्य आत्माओं को सद्गति प्रदान करे।

श्री वी० मायावन (चिदाम्बरम) : अध्यक्ष महोदय, मैं संसद में द्रमुक दल की ओर से श्री कमलनाथ तिवारी के अचानक निधन पर आपके द्वारा, प्रधान मंत्री द्वारा तथा सदन के अन्य सदस्यों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों में शरीक होता हूं। वह एक सरल तथा हंसमुख व्यक्ति थे। वह क्रान्तिकारी तथा प्रखर व्यक्तित्व के आदमी थे। ऐसी पुण्यात्मा अब सदन में नहीं रही।

अध्यक्ष महोदय से मेरा अनुरोध है कि वह शोक संतृप्त परिवार को द्रमुक दल की ओर से हार्दिक संवेदना पहुंचा दें।

श्री समर गुहा (कन्टाई) : श्री कमलनाथ तिवारी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये आपके द्वारा, प्रधानमंत्री द्वारा तथा सदन के अन्य सदस्यों द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं में मैं शरीक होता हूं। उनकी सहृदयता, उनके स्नेह तथा हर समय प्रफुल्लित व्यवहार से हर कोई प्रभावित था। हालांकि अध्यक्ष की

कुर्सी पर बैठकर वह बड़े दृढ़ हो जाते थे फिर भी सदन के बाहर तथा अन्दर भी सदन के सदस्यों की अपीलों तथा अनुरोधों के प्रति उनका प्रतिक्रियाशील रहना मैं नहीं भूल सकता ।

सदन के कार्य-करण में उनका योगदान निस्संदेह सराहनीय था, फिर भी अधिक सराहनीय उनका देश के स्वतन्त्रता संघर्ष में योगदान था । क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में सरदार भगत सिंह के निकट साथी के रूप में उनका स्मरण किया जायेगा ।

उनकी विनम्रता, सहृदयता, दृढ़ता का उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों में विशेष रूप से तथा लक्षित रूप में जिक्र किया गया है ।

श्री गनपतराव बापूराव दानी के प्रति मैं सहानुभूति तथा उनके परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं ।

प्रो० सत्येन्द्र नाथ बोस, जो न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व के रूप में उभरे का स्मरण करना भी मेरा कर्त्तव्य है ।

जिस प्रकार मानव इतिहास में मौलिक विज्ञान का स्मरण किया जायेगा ठीक उसी प्रकार उनका मौलिक विज्ञान के सिद्धांत के अंशदाता के रूप में स्मरण किया जाएगा । अभी वह 30 वर्ष के ही थे जब उनके 6 पृष्ठ के लेख ने प्लेंक के क्वानटम सिद्धांत की धारणा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया था। ब्रिटेन के समाचार पत्रों ने उनके शोध-ग्रंथ को प्रकाशित नहीं किया । परन्तु आइन्स्टीन ने न केवल इसका प्रकाशन किया बल्कि उसकी व्याख्या की और आज वह बोस-आइन्सटीन सिद्धांत के रूप में जानी जाती है । न जाने कितने सिद्धांत आज आइन्सटीन के नाम से जुड़े हुंए हैं । आज, सभी मौलिक कार्णकाएं बोस या फरमी के सिद्धांत का अनुकरण करती हैं ।

श्री बोस ने आइन्सटीन के एकीकृत क्षेत्र सिद्धांत पर भी काम किया । यदि वह आश्रित भारत में न जन्मे होते या उन्होंने क्रांतिकारी और स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग न लिया होता तो उन्हें 29 वर्ष की आयु में सन् 1924 में नोबल पुरस्कार मिला होता । उनके सिद्धांत पर काम करने वाले कई वैज्ञानिकों को संभवतः पुरस्कार मिल चुके हैं परन्तु उन्हें नहीं मिला ।

जब वह आइन्सटीन तथा मैडम क्यूरी के साथ काम करने के लिये आइन्सटीन के पास गए, तो उन्होंने यूरोप के क्रांतिकारी निर्वासितों को धन देना चाहा तो पकड़े ही गए थे कि ढ़ाका में यूरोपीय प्रोफेसर ने उनका बचाव किया ।

ढाका विश्वविद्यालय में 6 वर्ष तक उनका छात्र रहने का मुझे गर्व है । उन जैसे विज्ञान के छात्र मिलना न केवल देश में बल्कि मानव इतिहास में दुर्लभ है । यदि उन्हें नोबल पुरस्कार मिला होना तो उन्हें राष्ट्रीय सम्मान अवश्य मिला होता ।

उन्हें राष्ट्रीय प्रोफेसरशिप किस प्रकार मिली, इसका उल्लेख मैं गहरे शोक के साथ कर रहा हूं। संयुक्त सचिव से प्राप्त पत्र से उन्हें सदमा पहुंचा, उनके सहयोगी ने वह पत्र दबा लेना चाहा, परन्तु किसी न किसी भांति वह पत्र उन्हें मिल गया । पत्र में जिस भाषा से उन्हें संबोधित किया गया था, वह घटिया थी ।

बड़े ही खेद की बात है कि उनकी देखभाल के लिये कोई मेडिकल बोर्ड नहीं बनाया गया, उनका बैंक में एक भी पैसा नहीं था और उन्हें डाक्टरों के बिलों का स्वयं भुगतान करना पड़ा । बोस

आइन्सटीन की पचासवीं वर्षगांठ के अवसर पर विश्व के ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने आए परन्तु हम न केवल देश बल्कि विश्व में दुर्लभ वैज्ञानिक विभूति का सम्मान नहीं कर पाए ।

प्रधानमंत्री से मेरा अनुरोध है कि वह कम से कम उनके नाम पर देश में मौलिक विज्ञान संस्थान की स्थापना करवाएं । उनको मृत्यु उपरान्त यही श्रद्धांजलि भेंट की जा सकती है । जब जब मौलिक विज्ञान का स्मरण किया जाए तब तब उनका नाम भी स्मरण किया जाएगा । परन्तु मुझे खेद है कि ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय असाधारण वैज्ञानिक विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये मैं आपको राजी नहीं कर सका ।

डा० कर्णी सिंह (बीकानेर) : संयुक्त निर्दलीय संसदीय दल की ओर से मैं श्री तिवारी और श्री दानी के दुःखद निधन पर शोक प्रकट करता हूं । हालांकि श्री दानी से मेरा व्यक्तिगत परिचय नहीं था फिर भी मैं श्री तिवारी से भली भांति परिचित था और मैं उन्हें एक मार्ग दर्शक, मित्र तथा दार्शनिक समझता हूं ।

श्री तिवारी अत्यन्त प्रख्यात तथा सौम्य साथी थे तथा मैं स्पष्टवादिता से कह सकता हूं कि वह एक भले पुरुष थे । श्री तिवारी जाने माने स्वतन्त्रता-सेनानी थे तथा उन्होंने लाहौर षडयन्त्र केस में आजीवन कारावास भोगा । वास्तव में बड़े दुःख की बात है कि एक एक करके हमारे महान स्वतन्त्रता सेनानी हमको छोड़ रहे हैं । वे प्रजातन्त्र के रक्षक थे ।

अपने दल की ओर से मैं शोक संतप्त परिवारों को संवेदना प्रकट करता हूं ।

श्री एम० सत्यनारायण राव (करीम नगर) : आपके द्वारा तथा प्रधानमंत्री द्वारा प्रकट किए गए विचारों में शरीक होते हुए मैं श्री कमलनाथ तिवारी के बारे में कुछ शब्द कहना चाहता हूं । मैं उन्हें गत तीन वर्ष से जानता हूं परन्तु केवल गत वर्ष ही पता चला कि वह महान क्रांतिकारी शहीद भगतसिंह के साथी थे । राष्ट्र के लिये उन्होंने काफी बलिदान दिया ।

गत वर्ष मुझे अंदमान जाने का अवसर प्राप्त हुआ । जब मैं और कुछ अन्य सदस्य वहां गए तो हमें बताया गया कि उन्हें पोर्ट ब्लेयर की जेल में रखा गया था । जेलर ने हमें वह कोठरी दिखायी जहां उन्हें काफी अरसे तक रखा गया था । यह कोठरी अंधेरी थी । इसमें हवा नहीं आ सकती थी । इस महान व्यक्ति ने कई वर्ष इसी कोठरी में व्यतीत किए ।

मेरे विचार में यहां उपस्थित अधिकांश सदस्यों ने जेल तो क्या उन्होंने जेल की दीवार तक नहीं देखी होगी । ऐसी परिस्थिति में हम अनुमान लगा सकते हैं कि राष्ट्र तथा उसकी स्वतन्त्रता के लिये ऐसे महान व्यक्तियों ने कितना बलिदान दिया होगा । मुझे भी जेल जाने का दो बार अवसर मिला, देश की स्वतन्त्रता के लिये नहीं बल्कि नजरबन्दी विरोधक अधिनियम के अन्तर्गत मैं जेल गया । जेलों की वर्तमान स्थिति से मैं संतुष्ट नहीं हूं तब पहले की जेलों की स्थिति को तो सहज ही समझा जा सकता है । उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि स्वतन्त्रता उन्हें हाथ लगेगी अथवा नहीं, फिर भी उन्होने बलिदान दिया । ऐसे व्यक्तियों को महत्व दिया जाना चाहिये । परन्तु दुर्भाग्यवश हमने ऐसा नहीं किया समाचार-पत्रों ने भी उनकी उपेक्षा की । इतने बड़े क्रांतिकारी के निधन का भी समाचार पत्रों ने उल्लेख नहीं किया, केवल तीसरे अथवा चौथे पृष्ठ पर दो तीन वाक्यों में यह खबर छपी । समाचार पत्रों ने इनका उल्लेख नहीं किया, क्योंकि वह मंत्री नहीं थे ।

उनकी मृत्यु से देश के किसानों ने एक महानुभूतिपूर्ण, अनन्य सखा और दार्शनिक खो दिया है। वह उनके कल्याण में बहुत रुचि रखते थे। कुछ तथा कथित प्रगतिवादी उन्हें कुलकों का प्रतिनिधि समझते थे। लेकिन मेरे विचारों में वह किसानों के प्रतिनिधि थे। हमें उन्हें भूलाना नहीं चाहिये। उन्होंने किसानों के हितों के लिये बहुत योगदान दिया। उनकी मृत्यु से किसानों ने अपना एक हितैषी खो दिया है।

इन्हीं भावनाओं के व्यक्त करते हुए मेरा अनुरोध है कि श्री के० एन० तिवारी के शोक संतप्त परिवार को मेरी संवेदना भिजवा दी जाए।

Shri Jambuwant Dhote (Nagpur): I, on behalf of Forward Block and Mahavidarbha Rajya Samiti pay tributes to Late Shri Ganpat Rao Bapu Rao Dani, Member, Legistlative Assembly and Shri K.N. Tiwary, Member, Lok Sabha. Shri Dani was an associate of Shaheed Bhagat Singh who gave a crushing blow to British Imperialism. Shri K. N. Tiwary was a revolutionary and close associate of Sardar Bhagat Singh.

With these words I pay tributes to Shri K.N. Tiwary and Shri Dani.

Shri Ram Kanwar (Tonk): I associate myself on behalf of the Swatantra Party with the sentiments expressed by you, the Prime Minister and other Members of Lok Sabha. He was a revolutionary and thorough gentleman. He was very much affectionate to the new Members of Lok Sabha. With his death, this House and the whole country has suffered a great loss. I request you to convey my condolences to the members of the bereaved family and God may give them courage to bear the shock.

श्री पी० जी० मावलंकर (अहमदाबाद) : श्री कमल नाथ तिवारी तथा श्री गणपतराव बापूराव दानी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये, अध्यक्ष महोदय, मैं आपके, सदन के नेता तथा अन्य माननीय सदस्यों के साथ हूं। तिवारी जी जैसे महान क्रांतिकारी तथा इतने ही महान संसद विज्ञ के आज बजट अधिवेशन शुरु होने के दिन अपने बीच न पाना, इस सदन का एक बड़ा दुर्भाग्य है। दुःखद दंगों के दौरान पिछले महीने जब मैं अहमदाबाद में था तो तिवारी जी के आकस्मिक देहान्त का दुखद समाचार मिला। अहमदाबाद में नौजवान लोगों को मरते देख मेरी आंखों में आंसू आये और जब मेरे दिव्य चक्षुओं के सामने अडिग निश्चय, अनुशासन, समर्पण तथा निस्वार्थ भावों वाले क्रांतिकारी की तस्वीर सामने आयी तो मेरी आंखों में और भी अधिक आंसू आये। तिवारी जी इन चारों गुणों को स्वतन्त्रता के बाद इस सदन में लाये, मैं कह सकता हूं कि इन गुणों को हमें इस सदन के संसदीय जीवन के लिये ही आवश्यकता नहीं बल्कि जनजीवन तथा राजनैतिक जीवन के लिये भी है ताकि देश अधिक समृद्ध तथा सुखी हो सके। हम सभी को इसी विश्व में जाना है और मेरे विचार में यही तिवारी जी के प्रति उचित श्रद्धांजलि है। मुझे तिवारी जी को जानने का एक वर्ष से अधिक समय से अवसर मिला, मैं उस समय तक सदन के लिये नया था। उस एक वर्ष के दौरान सदन के अंदर और बाहर मुझे तिवारी जी को सक्रिय होकर काम करते हुये देखने का अनेक बार अवसर मिला। इस सदन में जब भी उन्होंने सभापति पैनल के सदस्य के रूप में सभापतित्व किया तो हम सब इस बात के साक्षी हैं कि वे शिष्टता और सुदृढ़ता, संकल्प और उदारता के साथ सभापतित्व करते थे। इस प्रकार के लोगों ने विश्व प्रदान की भले ही वे क्रांतिकारी आन्दोलन में रहे हों अथवा संसदीय आन्दोलन में रहे हों। तिवारी जी जैसे लोग क्रांतिकारी, आध्यात्मिक, राजनैतिक तथा संसदीय क्षेत्र में उभरे ताकि वे जनमत के नेता

हो सकें तथा अजन्मी पीढ़ियों के नेता हो सकें। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि अब आप मेरी हार्दिक सहानुभूति को दिवगंत आत्मा के परिवार तक पहुंचायें जो इस सदन तथा देश द्वारा विस्मृत किये जाने पर अन्ततः अपने महान सपूत के लिये आंसू बहायेगा। मुझे आशा है कि आप मेरी सहानुभूति को उन तक पहुंचायेंगे।

Shri Bibhuti Mishra (Motihari): Mr. Speaker, the house of Pt. Kamal Nath Tiwary is located at a distance of 4 miles from my house. His family members and near relatives used to condemn his active role in social revolution and his disapproval of untouchability. Even then he was adamant to his views and as a result of which later on he joined the revolutionary party. He remained revolutionary through out his life. His relatives were afraid of visit him because he was a revolutionary and they were afraid that because of their relatives they may not have to go behind the bars. He was very close to me. Whenever I visited his house as congress worker, I got all sort of affection and encouragement from his mother as she was very generous lady. She never grudged that her son was behind the bars. That was a very hard time and it was not easy to visit revolutionaries in jails. Today, the time is altogether changed . Shri Tiwary was so generous that he used to help others even if he had to secure loan for the purpose. He used to help his friends by way of rendering all sort of possible help. He never used to have illwill against anybody. Every man of our District is weeping over this loss. He because a man of all India fame due to his frequent imprisonment which he underwent in the various Jails of the country. It was because of Shri Tiwary that Sardar Bhagat Singh visited Batia and the people got an opportunity to have the 'Darshan' of Sardar Bhagat Singh.

The Members of the Parliament came over here from every nook and corner of the country. In case of their death in Delhi, their bodies are cremated at Nigambodh ghat Delhi. It is my desire that some arrangements should be made by the Ministry of Defence to take the dead bodies of Members of Parliament to their native places, in case their family members so desire that will provide an opportunity to the people of his constituency to have last glimpse of the men who lived and died for their cause.

I hereby associate myself completely with the sentiments and sorrows expressed by the House and the sad demise of a man who spent a number of years of his life in the jail and was prepared to embrace the gallows for the sake of motherland.

In the end, I want to submit that same sort of memorial should be set up to keep the memory of such a selfless soul immortal for coming generation. I associate myself with the sentiments of sorrow and hope that you will kindly convey our condolences to the bereaved family.

श्री आर० के० सिन्हा (फैजाबाद) : आज हमें यह विश्वास नहीं आता कि श्री तिवारी हमारे बीच नहीं हैं इस लोक सभा में श्री तिवारी मेरे से आगे की सीट में बैठते थे और मैंने प्राक्कलत समिति में उनकी अध्यक्षता में लगभग दस महीने काम किया और इतने समय के दौरान श्री तिवारी जैसे महान व्यक्ति के प्रति श्रद्धा और सम्मान का पैदा होना स्वाभाविक ही था। जब श्री तिवारी अपने नये निवास स्थान में रहने के लिये आये तो उस समय एक हरिजन व्यक्ति वहां रह रहा था उस व्यक्ति ने श्री तिवारी से कहा कि अब आप आ गये हैं तो हमें यहां से निकाल दिया जायेगा। तिवारी जी ने उत्तर

दिया, "नहीं आप यहीं रहेंगे क्योंकि तिवारी के घर से किसी को निकाला नहीं जाता।" इसी तरह मुझे वह घटना भी याद है जब कि श्री तिवारी जी ने एक गरीब आदमी की सहायता के लिये किसी से पांच हजार रुपये उधार लिये, इतना ही नहीं, उनके प्राक्कलन समिति के कक्ष में अनेक स्वतंत्रता सेनानी सहायता प्राप्त करने के लिये आते थे और वे सहर्ष उनकी सहायता करने के लिये तत्पर हो जाते थे। परन्तु इतने विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होते हुये भी श्री तिवारी ,लालफीताशाही और गैर-जिम्मेदार अधिकारियों के हमेशा विरुद्ध रहे।

यदि कोई इनसे पैसा मांगने आता था तो वे न केवल उन्हें पैसा ही देते थे बल्कि रहने की व्यवस्था भी करते थे तथा उन्हें अपने जिले को भेजने का प्रबन्ध भी करते थे।

तिवारी जी ने हमें अंडेमान में की गयी भूख हड़ताल के बारे में बताया था। तिवारी जी की आकांक्षा यह थी कि भगतसिंह तथा अन्य क्रांतिकारियों की जीवनियों को फिल्मों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाये ताकि भारत के युवक स्वतन्त्रता आन्दोलन के जननायकों के बारे जानकारी प्राप्त कर सके और यह जान सके कि आदमी की लड़ाई किस प्रकार जीती गयी। भगतसिंह की जीवनी पर एक फिल्म बनाने का प्रस्ताव भी था। उन्होंने इस संबंध में एक फिल्म निर्माता से बातचीत भी की थी। उनकी मृत्यु के बाद एक फिल्म निर्माता का पत्र आया था। वे इतने महान् थे। मैं उनकी प्रशंसा तथा वंदना करता हूं वे एक मूक क्रांतिकारी थे, जो शांति, गांधी जी तथा किसानों के उपासक बन गये थे। उनके दिल के अंदर क्या था, उसे सभी देख सकते थे।

श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर प्रदान करके मुझे आपने सम्मानित किया है। दिवगत आत्मा तथा श्री जी० पी० दानी को श्रद्धांजलि देने के लिये मैं भी साथ हूं।

प्रो० एस० एल० सक्सेना (महाराजगंज) : एक पुराने स्वतन्त्रता सैनानी तथा महान् पुरुष श्री कमल नाथ तिवारी मेरे काफी समय से सहयोगी रहे हैं। मैंने उन्हें स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों देखा जिस वीर भावना से वे अन्य लोगों को प्रेरित करते थे, वह मुझे याद है।

वे हमारे साथ संसद में भी रहे। वे प्राक्कलन समिति के सभापति रहे और मैंने देखा कि वे किस प्रकार एकाग्रचित होकर अपना काम करते थे। उनका ज्ञान सर्वोत्मुखी थी।

इस सदन में हमने उन्हें चेयर पर देखा और जिस सूदृढ़ता तथा नम्रता से वे कार्य संचालन करते थे, उसकी हम प्रशंसा करते हैं।

पुराने स्वतन्त्रता सैनानी एक एक करके स्वर्ग सिधार रहे हैं और उनमें से एक और महान् सैनानी स्वर्गलोक सिधार गये।

प्रकट की गयी संवेदना में मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं और मुझे आशा है कि आप हमारी संवेदनाओं को शोक संतप्त परिवार तक पहुंचायेंगे।

Shri Shiv Shanker Prasad Yadav (Khagaria): We have been paying our respects and tributes to all those who suffered for the cause of the country. Nobody will remain unimprssed by seeing the gentleness and smiling face of Shri Tiwariji. All of us in this House were affected by the way he used to conduct the business in the House and his coordial relations with everybody. He is no more with us. We pay our heart felt condolences and hope that you will kindly convey the same to his family.

श्रीमती एम० गौडफ्रे (नाम निर्देशित-आंगल भारतीय) : आप, सदन के नेता तथा अन्य माननीय सदस्यों द्वारा संवेदना प्रकट करने में मैं भी साथ हूं ।

यह विश्वास करना कठिन है कि तिवारीजी अब नहीं रहे और उनका चेहरा अब हम कभी नहीं देखेंगे । विपत्ति के समय हम उनके पास परामर्श लेने जाते थे । वे शान्ति में जीये और मरे । मैं चाहता हूं कि आप उनके परिवार तक हमारी हार्दिक संवेदनायें पहुंचायें और हम कामना करते हैं कि उनके परिवार को भगवान से सान्तवना मिले ।

ध्यक्ष महोदय : अब सदस्यगण संवेदना प्रकट करने के लिये कुछ देर मौन खड़े रहें ।

तत्पश्चात सदस्यगण कुछ देर मौन खड़े रहे ।

The Member then stood in silence for a shortwhile

तत्पश्चात् लोक-सभा मंगलवार, 19 फरवरी, 1974/30 माघ, 1895 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, the 19th February, 1974/ 30th Magha 1895 (s).

MGIPRRND—77LSS/74—Sec, VIII Day—490